जनवरी १९४१] # देश-दर्शन [माघ १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष] [संख्या ७

हालैण्ड

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-	
Foreign	Rs. 6/-	
This Copy	As -/6/-	

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

——:o:——

संक्षिप्त इतिहास

हालैंड देश को निदरलैंड भी कहते हैं। हालैंड के राजाओं के पत्रों में हालैंड का सर्व प्रथम नाम का प्रयोग २ मई सन् १०६४ ई० में किया गया था। प्राचीन काल में वाल (प्राची म्यूज़) नदी और मेरवे नदी के बीच का जंगली भाग हालैंड कहलाता था। यह बर्तमान डोर्डरेच नगर के चारों ओर का प्रान्त था। प्राचीन हालैण्ड का कुछ भाग १४२१ ई० की प्रबल बाढ़ में पानी के भीतर डूब गया था। काउंट लोग हालैंड के प्रथम शासक थे। काउन्ट लोगों का इतिहास एमामॉट के दुर्ग से सम्बन्ध रखता है। काउन्ट की पदवी सर्व प्रथम ग्यारहवीं सदी में ली गई थी।

६२२ ई० में चार्ल्स सरल फ्रीज़िया के काउन्ट (कुलीन, बड़ा जन) डिर्क प्रथम के अधिकार में हो गया था। ६३६ ई० में डिर्क प्रथम की मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर डिर्क द्वितीय गद्दी पर बैठा। डिर्क द्वितीय ने एगमॉट का मठ स्थापित किया था। ६८३ ई० में डिर्क द्वितीय को महाराजाधिराज ओटो तीसरे से कुछ भूमि प्राप्त हुई। जो भूमि उसे मिली थी वहां पर अब ज़्वेडेरज़ी समुद्र स्थित है। डिर्क का राज्य म्यूज नदी के

किनारे से व्ली नदी के तट तक फैला हुआ था। ६८८ ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अर्नल्फ गद्दी पर बैठा। अर्नल्फ के मरने के बाद उसका पुत्र डिर्क तृतीय गद्दी पर आया। उसने मेरवेदा के बनैले प्रान्त पर भी अपना अधिकार जमा लिया था। इस नम प्रान्त में उसने १०१५ ई० में एक दुर्ग बनाया जिसके चारों ओर डोर्डरेच का नगर बाद में बस गया। इस दुर्ग के सम्बन्ध में १०१८ में एक बड़ा युद्ध हुआ जिसमें डिर्क की विजय हुई। इसी विजय से हालैंड के काउन्टी का सच्चा इतिहास आरम्भ होता है। १०३६ ई० में डिर्क तृतीय की मृत्यु हुई और उसका पुत्र डिर्क चतुर्थ गद्दी पर बैठा।

डिर्क चतुर्थ ने जीलैण्ड की साम्राज्ञी सेना को १०४७ ई० में हराया और प्रान्त पर अधिकार किया। इसी राजा के समय में हालैण्ड और फ्लैण्डर्स के मध्य ज़ीलैंड और वाल्चेरन प्रान्त के सम्बन्ध में झगड़ा आरम्भ हुआ था। १०४६ ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् फ्लोरिस प्रथम गद्दी पर बैठा। १०६१ ई० में नेडेरहेमेंट के युद्ध में फ्लोरिस विजयी होता हुआ मारा



गया। उसके बाद उसका पुत्र डिर्क पञ्चम् गद्दी पर बैठा। वह बालक था इस लिये उसकी माता सैक्सनी की जेरट्रूड राज्य की अधिकारिणी रही। डिर्क पञ्चम् ने अपने दूसरे पिता फ्लैंडर्स के राबर्ट की सहायता से हालैंड के समस्त राज्य पर अधिकार प्राप्त किया था और वह हालैंड का काउन्ट बना था।

१०६१ ई० में उसकी मृत्यु पर उसका पुत्र फ्लोरिस द्वितीय गद्दी पर बैठा। ११२२ ई० में उसकी मृत्यु हुई और उसका पुत्र डिर्क षष्टम् गद्दी पर बैठा। ११२५ ई० में ऊस्टर्गू और वेस्टर्गू के प्रान्त हालैंड में मिलाए गये। डिर्क की मृत्यु के पश्चात् ११५७ ई० में फ्लोरिस तृतीय हालैंड की गद्दी पर बैठा फ्लोरिस तृतीय ने तृतीय क्रूसेड (ईसाइयों का धर्म युद्ध) में भाग लिया और ११६० ई० में मरा। उसकी मृत्यु के पश्चात् डिर्क सप्तम गद्दी पर बैठा। उसका शासन-काल बड़ा भयानक परन्तु सफल रहा। डिर्क की मृत्यु १२०४ ई० में हुई और उसकी पुत्री आदा जो केवल १७ साल की थी गद्दी पर बैठी परन्तु पूर्वी फ्रीजलैंड का काउन्ट विलियम गद्दी लेना चाहता था इसलिये १२०६ ई० में

वह हालैंड का काउन्ट बना। उसने बड़े बड़े बहादुरी के काम किये। वह महाराजाधिराज ओटो के साथ युद्ध में लड़ा और चतुर्थ क्रूसेड में प्रमुख भाग लिया था। उसकी मृत्यु १२२२ ई० में हुई और उसका बालक फ्लोरिस चतुर्थ गद्दी पर बैठा। १२३५ ई० में वह मार डाला गया और उसका भतीजा विलियम द्वितीय गद्दी पर बैठा।

विलियम द्वितीय का नाम हालैंड के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। वह १२४७ ई० में वह महाराज फ्रैंड्रिक द्वितीय की सहायता से रोमन्स का राजा चुना गया था। १२५६ ई० में उसकी मृत्यु हुई और उसका बालक पुत्र फ्लोरिस पञ्चम गद्दी पर बैठा। फ्लोरिस पञ्चम का नाम भी हालैंड के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। वह एक बड़ा राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ तथा शूरवीर सैनिक था। उसने ४० साल तक राज्य किया था। उसके समय में हालैण्ड की बड़ी उन्नति हुई और हालैंड के लोगों को ब्रिटिश सागर में मछली मारने की आज्ञा प्राप्त हुई थी। हालैंड का व्यापार भी उसके काल में बहुत बढ़ा था। वह इंगलैण्ड के राजा एडवर्ड प्रथम का मित्र था। बाद को वह फ्रांस के राजा का मित्र भी हो गया था। उसने

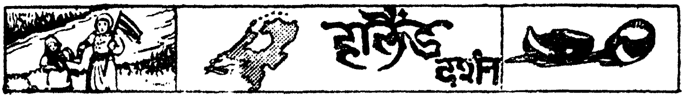


अपने पुत्र को इँगलैण्ड शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा था। उसके पुत्र जान का ब्याह एडवर्ड प्रथम (इँगलैंड-का राजा) की पुत्री एलीनोर से हुआ था। २७ जून सन् १२९६ ई० में फ्लोरिस की हत्या म्वीडेन नामक स्थान पर हुई और उसके बाद उसका पुत्र जान प्रथम राज्य सिंहासन पर बैठा। यह डिर्क प्रथम के वंश का अंतिम राजा था। इस वंश में १४ राजा हुये और उन्होंने लगभग ४०० साल तक राज्य किया। इस वंश के सभी राजा बहादुर और चतुर थे केवल अंतिम राजा ही निर्बल था।

जान प्रथम के बाद जान द्वितीय अवेसनेस वंश का राजा हुआ। यह विलियम द्वितीय के बहन अलीदा का पुत्र था। अलीदा का ब्याह हैनाट के काउन्ट जान अवेसनेस से हुआ था। इस वंश ने १४१७ ई० तक राज्य किया था। इस वंश का अंतिम राजा विलियम चतुर्थ था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पुत्री जैकोबा थी। जैकोबा का ब्याह जान के साथ हुआ था जो फ्रांस का राजकुमार था और वहां की गद्दी का हक़दार था।

जैकोबा की मृत्यु १४३६ ई० में हुई और उसके बाद बरगंडी का फिलिप हालैंड का राजा हुआ। बरगंडी

के वंश ने १४८२ ई० तक राज्य किया। इस वंश की अंतिम शासक डचेडमैरी थी उसकी मृत्यु १४८२ ई० में हुई उसके बाद हालैंड की गद्दी उसके बालक पुत्र फिलिप को मिली। फिलिप हैब्स बर्ग वंश का था। हैब्सबर्ग वंश के बाद आरेञ्ज बंश का राज्य हालैंड पर हुआ। स्पेनिश शासन काल में हालैंड की स्थिति बड़ी खराब रही। आरेञ्ज वंश के लोगों ने हालैंड को स्पेन के जुवे से छुड़ाया था।

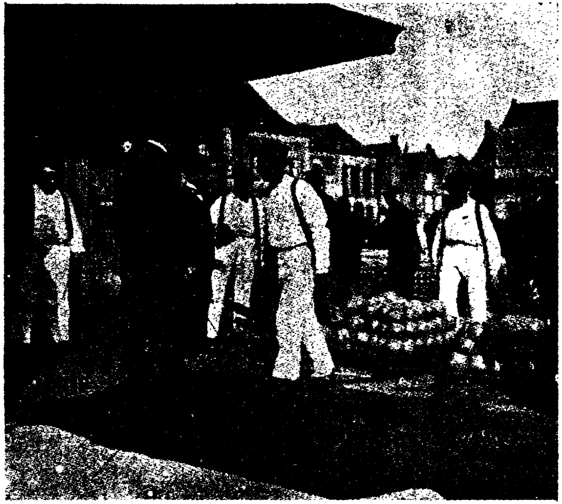


स्पेन के साथ युद्ध

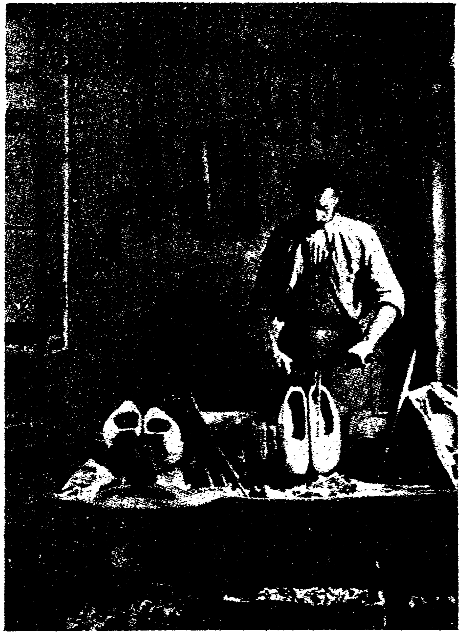
बारहवीं और तेरहवीं सदी में हालैंड की स्थिति बड़ी खराब रही। उसके ऊपर भाँति भाँति के कर लगाये गये। क्रूसेड के कारण उसकी स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ था। वहां के नोबुलों (प्रथम श्रेणी के लोग) ने अपने अपने आदमियों और सम्पत्ति को एकत्रित किया और पूर्व की ओर झुके। जो लोग हालैंड में बाकी रहे वह शान्ति में अपना काम करते रहे और उन्नति करते गये। प्रजा जो रकम अपने लार्डों के लिये एकत्रित कर सकी वह उसने उन्हें दिया और उसके बदले में लोगों को ऊँचे पद तथा चार्टर प्राप्त हुये। चार्टरों में उन्हें कुछ स्वतंत्रता भी प्रदान की गई। प्रजा पर कुछ कर अवश्य लगाये गये। परन्तु वह अधिक न थे। लोगों को न्याय के लिये कचहरियों में अपने मामले पेश करने की स्वतंत्रता थी और वह न्यायालयों में अपना न्याय करा सकते थे। क्रूसेड के कारण व्यापार की उन्नत्ति हुई। और उसी के कारण हालैंड और फ्लैण्डर्स के बहुत से नगर उन्नत्ति कर गये और कई एक बड़े बन्दरगाह भी हो गये और व्यापार के केन्द्र बन गये। उस समय

इंगलैण्ड का ऊन अपनी अच्छाई के लिये प्रसिद्ध था। वहाँ से लगभग सारा ऊन निदरलैण्ड जाता था और उससे अच्छे से अच्छे ऊनी कपड़े तयार किये जाते थे। सन् और पटसन के भी वहाँ पर सुन्दर सामान तयार किये जाते थे। उस समय हालैंड के ड्यूक और काउन्ट (ज़मीदार तथा ताल्लुकेदार) लोग अपनी प्रजा की उन्नति देखकर प्रसन्न थे। वह सभी भाँति उनकी सहायता करते थे जिससे दिन प्रति दिन उन्नत्ति ही हो रही थी। हालैण्ड उस काल में कला-कौशल तथा विद्या में उन्नति कर रहा था। उस काल में वहां पर बहुत से चर्च भी बनाये गये।

पन्द्रहवीं सदी में बरगंडी का ड्यूक फिलिप जिसे फिलिप गुड (अच्छा फिलिप) कहते हैं। वह निदरलैंड के कुछ भाग का स्वामी बना। वह सचमुच एक खराब आदमी था। उसकी भतीजी का नाम जैक्वेलिन था। वह निदरलैण्ड के कुछ प्रान्तों की मलकिन थी। फिलिप ने वह प्रान्त उससे ले लिये। इस प्रकार फिलिप निदर-लैंड के १७ प्रान्तों का मालिक बन बैठा। उसने डच लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और उन्हें एक



अल्कमार का मक्खन का बाज़ार



हालैण्ड का लकड़ी के जूते बनाने वाला



राटर्डम के नहर पर एक हवाई चक्की का दृश्य ।



युद्ध में सम्मिलित किया जिसके लिये डच लोग तयार न थे। उस युद्ध में डच लोगों की हार हुई। उसने प्रजा के बहुत से अधिकार भी छीन लिये। उनके बहुत से नगर भी नष्ट हो गये।

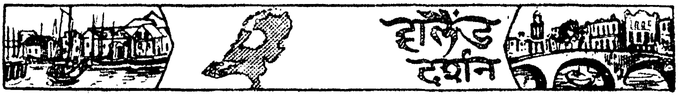
१४६७ ई० में फिलिप की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र चार्ल्स बोल्ड (बहादुर) गद्दी पर बैठा। फ्रांस तथा और दूसरे देशों के साथ युद्ध करता रहा और इस प्रकार उसने अपनी शक्ति का सत्यानाश कर डाला। जब कभी भी उसे रुपयें तथा सैनिकों की आवश्यकता होती थी वह हालैंड के प्रान्तों से उन्हें धोके बाजी के साथ लेता था। यद्यपि चार्ल्स उस काल में निदरलैण्ड का राजा माना जाता था तो भी हालैण्ड उस समय कई छोटे छोटे राज्यों में बट गया था। यह राज्य एक दूसरे देश से तथा घृणा रखते थे। वहां के सभी नगर एक सूत्र में बँधकर विदेशी शासक का सामना नहीं करते थे। वरन् जब कभी किसी नगर को विदेशी लोग तबाह करते थे तो वह उसकी तबाही देख कर प्रसन्न होते थे।

उस समय फ्रान्स का ग्यारहवां राजा लूई था। उससे चार्ल्स अच्छी मित्रता किये हुये था। चार्ल्स चाहता

था कि लूई अपने डच प्रान्त उसे दे दे फिर चाहे जो कुछ करे। लूई ने अपने डच प्रान्त उसे दे दिये इस प्रकार चार्ल्स और अधिक शक्तिशाली हो गया था।

१४७६ ई० में चार्ल्स स्विस लोगों के साथ युद्ध में सम्मिलित हुआ और कुछ युद्धों में विजयी होने के पश्चात् मारा गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पुत्री मैरी हालैंड की रानी बनी। उसने अपनी प्रजा से बूढ़े फ्रान्सीसी राजा के विरुद्ध सहायता माँगी और उन्हें सहायता के बदले में बहुत से बचन दिये। उसने जर्मनी के बादशाह के साथ व्याह किया। और जब कि फिलिप केवल चार साल का था वह मर गई। फिलिप ने १४९६ ई० में जोना से विवाह किया। जोना स्पेन के राजा की पुत्री थी। इन दोनों से जो संतान हुई उसका नाम चार्ल्स पञ्चम् स्पेन का राजा हुआ। चार्ल्स पञ्चम् के समय में ही स्पेन तथा निदरलैंड के बीच जो युद्ध हुआ उसके बीज बोये गये।

डच लोग बड़े स्वतंत्र तथा देश प्रेमी होते हैं। चार्ल्स पञ्चम और फिलिप द्वितीय के शासन काल में डच लोगों के हाथ से अधिकार छीन लिये गये और शासन की



बागडोर स्पेनिश नोबुल तथा सेनापतियों के हाथ में दे दी गई थी।

डच जवाँमर्दों तथा देश प्रेमियों को "बेगर" (भिखारी) कहते हैं। यह नाम उन्हें स्पेन के उनके एक बैरी शासक ने दिया है। स्पैनिश शासन काल में डच लोगों पर नये नये कर लगाये गये और किञ्चित् मात्र के बदलने पर उन्हें हजारों की संख्या में प्राण दण्ड दिया गया तथा मार डाला गया। थोड़े से जुर्म करने में हज़ारों निरपराधियों का खून बहा दिया जाता था। कर के बोझ से पीड़ित होकर डच लोग बलवा करते थे और अपना सिर उठाते थे। इसी कारण उस काल में हालैंड की प्रजा बहुधा प्रयत्न करती थी कि वह किसी प्रकार स्पेन के शासन को अपने ऊपर से उतार कर फेंक दे। डच देश प्रेमियों को उस समय सहसा विजय हुई और उन्होंने ब्रील नगर पर अधिकार कर लिया। यह नगर स्पेन के अधिकार में था।

देश दर्शन

स्थिति जनसंख्या तथा क्षेत्रफल

हालैंड के पूर्व में जर्मनी, दक्षिण में बेल्जियम, उत्तर-पूर्व में डोलार्ट और पश्चिम में उत्तरी सागर है। उत्तर से दक्षिण को यह देश १६० मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम को १६० मील चौड़ा है। इस देश का क्षेत्रफल १५७६० वर्गमील है। हालैंड देश का क्षेत्रफल घटता बढ़ता रहता है। इस देश को सदैव समुद्र से एक प्रकार का युद्ध करना पड़ता है। हालैंड में ग्यारह प्रान्त हैं जिनका क्षेत्रफल और जन-संख्या १९२९ की जन-गणना इस प्रकार है :—

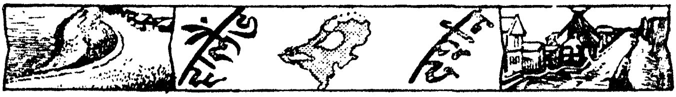
प्रान्त	क्षेत्रफल (वर्गमील में)	जनसंख्या
उत्तरी ब्राबन्त प्रान्त	१९२०	८२३.८६३
गेल्डेरलैंड	१९४०	८,००,०००
दक्षिणी हालैंड	११३२	१८,००.०००
उत्तरी हालैंड	१०५६	१४,००,०००
ज़ीलैंड	७०७	२,५०,०००
यूट्रेच	५२६	४,००,०००
ओवरीसेल	१२९५	५,००,००२
ग्रोनिंजेन	८८३	४,००,०००
ड्रेन्थे	१०२८	२,२१,७८५
लिम्बर्ड	८ ७	५,००,०००

आजकल समस्त हालैण्ड की जन-संख्या लगभग ८० लाख है।

जलवायु तथा वर्षा

हालैण्ड एक छोटा सा देश है। इसलिये लगभग समस्त देश में एक सी जलवायु पाई जाती है। हालैंड में शीत काल अधिक बड़ा होता है। यहाँ का सबसे कम ताप ६° अंश है। यूट्रेच नगर लगभग मध्य में है। वहां जनवरी का महीना सबसे अधिक ठंडा होता है और उस समय वहाँ का ताप ३३'२ अंश रहता है। सबसे गर्म महीना जुलाई का होता है, उस महीने का सब से ऊँचा ताप ६२'६ अंश रहता है। हालैंड में दक्षिणी पश्चिमी मानसून ६ महीने चलता है जिससे शीत काल का ताप बढ़ जाता है। अप्रैल से जून तक उत्तरी-पश्चिमी मानसून चलता है जिससे ग्रीष्म काल ठंडा हो जाता है। यूट्रेच के पूर्वी भाग में शीत काल में बरफ से जम जाती है और मार्ग बन्द हो जाते हैं। बाँध के समीप वाले भाग पूर्वी भागों से अधिक नम रहते हैं। यूट्रेच में साल में २७'५ इंच वर्षा होती है। जुलाई से सितम्बर तक ६'२ इंच और फरवरी से अप्रैल तक ४'७ इंच वर्षा होती है। जुलाई, अगस्त और सितम्बर विशेष वर्षा के महीने हैं। जब वर्षा नहीं होती तो नहरों द्वारा सिंचाई

होती है। पानी की अधिकता नहरों द्वारा रहती है। इसलिये हालैण्ड का लगभग ८० प्रतिशत भाग नम रहता है। हालैंड में कुहरा और ओस बहुत पड़ती है जिससे फ्रीज़लैंड और ज़ीलैंड के प्रान्तों को हानि होती है।



प्राकृतिक दशा

हालैंड का अधिकांश भाग मांस और राइन नदी का डेल्टा है। ज़ीलैंड के द्वीप समूह के उत्तर-पूर्व की ओर लहरें चलती हैं। दक्षिणी-पश्चिमी हवा के कारण तूफान बहुधा आया करते हैं।

स्कैण्डीनैविया की बरफ की तरह हालैंड के उत्तरी-पूर्वी तथा उत्तरी-पश्चिमी भाग तक आती है। ड्रेन्थे, ओवेरीसेल और गेल्डेरलैण्ड के प्रान्तों में हिमानी चट्टानें पाई जाती हैं। हालैंड की छोटी पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण फैली हुई हैं। उनके निचले ढालों में पथरीली भूमि पाई जाती है। इन ऊँचे भागों में सबसे अंतिम वाले भाग की मिट्टी बलुही है हालैंड में पांच मुख्य पहाड़ियां हैं। पहली पहाड़ी एमेन से ग्रोनिञ्जेन तक दूसरी एन्स्चेडे से गोटमार्सम तक, तीसरी लोचेम से हावेल्टे तक, चौथी आर्बहेम से हाटेम तक और पांचवीं रहेनेन से बुसूम तक जाती है। अंतिम पहाड़ी के पश्चिम हिमानी चट्टानें समुद्र के धरातल के नीचे हैं। उत्तरी हालैण्ड में बोरिंग करके उनका होना निर्णय किया गया है।

इम्बोस्च की पहाड़ी की ऊँचाई ३६१ फुट है। जिन

स्थान पर हिमानी की चट्टानें नहीं हैं वह दक्षिण-पूर्व की ओर अधिक ऊँचे हैं और उत्तरी आर्डेनेस प्लेटू के एक भाग हैं। पश्चिम की ओर हालैंड का लगभग एक चौथाई भाग समुद्र के धरातल से नीचे है। सबसे अधिक नीचाई १६ से २० फुट तक है।

उत्तरी हालैंड में बहुत सी खाड़ियां हैं। हालैंड के तटों पर बालू की पहाड़ियां पाई जाती हैं। इन पहाड़ियों की ऊँचाई ३० से चालीस फुट तक है। केवल हार्लेम के समीप हाई ब्लिङ्कर्ट की ऊँचाई २०० फुट है। जहाँ पर हवा का प्रभाव अधिक है वहाँ पर इन बालू की पहाड़ियों की चौड़ाई भी अधिक हो गई है। अल्कमार के उत्तर-पश्चिम इनकी चौड़ाई २½ मील से भी अधिक हो जाती है।

प्राचीन बांध अब बहुत नीचे हो गये हैं। रोमन काल के बने हुये बांध मिले हैं जो समुद्र के धरातल से भी नीचे हैं। कहीं कहीं पर पुराने बांध बिलकुल नष्ट कर दिये गये हैं और उनके स्थान पर नये बांध बनाए गये हैं। बालू के बांधों के कारण बहुत से तटीय बन्दरगाह समुद्र से दूर हो गये हैं।

हालैंड का पानी उत्तरी सागर में गिरता है। हालैंड की मुख्य नदियां राइन, मास (म्यूज़) स्चेल्डे हैं। इन सब के निकलने का स्थान हालैंड के बाहर है। राइन नदी के कई भाग हो जाते हैं। वाल, लेक, वेच्ट, ईसेल आदि हालैंड की दूसरी नदियाँ हैं।

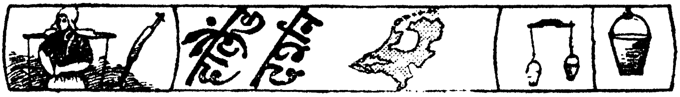
हालैण्ड की खाड़ियों में लगभग १२०० मील तक जहाज़ चल सकते हैं। यह खाड़ियां ग्रीष्म काल में छिछली हो जाती हैं। छोटी नदियों से पानी लेकर सिंचाई का काम भी किया जाता है। बड़ी नहरों में छोटे जहाज़ तथा स्टीमर चलते हैं। नहरों की संख्या हालैण्ड में बहुत है।

हालैण्ड में झीलें भी बहुत हैं। यद्यपि यह छोटी हैं। बहुत सी झीलें बहुत कम गहरी हैं और वहां पर सेवार तथा पीट घास होती है। बहुत सी झीलों में समुद्र का बन्द किया हुआ पानी भरा है। फ्रीज़लैण्ड के प्रान्त में अधिक झीलें हैं। फ्लेउसेन, तजेउके मीर, स्लोटेर मीर, स्नोकेरमीर नामक झीलों में मछलियां बहुत बड़ी संख्या में पाई जाती हैं।

प्रकृति ने हालैण्ड को ऐसा बनाया है कि उसे

अपनी रक्षा करनी बहुत आवश्यक है। यदि वहां बांध न बनाए जावें तो उसका बहुत सा भाग समुद्र में डूब जावे। १२७७ ई० की बाढ़ में ३० गाँव डूब गये थे। १४२१ ई० की बड़ी बाढ़ में ७२ गाँव डूबे थे और एक लाख आदमियों की जानें गई थीं। इसी लिये प्राचीन काल में ही लोग वहाँ समुद्र की बाढ़ को रोकने के लिये बालू तथा मिट्टी के बांध बनाने लगे थे। वर्तमान समय में बांधों के बनाने में अधिक रुपया खर्च किया जाता है। अब बड़े बड़े पक्के बांध बना दिये गये हैं। जिससे समुद्र का पानी देश के भीतर नहीं प्रवेश कर सकता है।

वेस्टकापेले का बांध वेस्टकापेले और डैमबर्ग के मध्य में है। होराडस्बोस्चे जोवेरिंग का बांध काम्पेर डुविन से पेटेन के समीप तक है। यह पन्द्रहवीं सदी में बने थे। ऐसे ही बड़े बड़े बांध बनाए गये हैं। बांधों की देखभाल सदैव सरकारी अफसर तथा नौकर किया करते हैं। वेस्टकापेले का बांध संसार में सबसे अधिक सुन्दर और दृढ़ है। यह २ मील से अधिक लम्बा और ३९ फुट चौड़ा है। हेल्डेर का बांध ५ मील लम्बा और १२ फुट चौड़ा है। वेस्टकापेले के बांध के ऊपर



सड़क तथा रेलवे लाइन है। हेल्डेर बांध पर सड़क बनी है।

न्यूमेर्वेदे की नहर एम्स्टर्डम से राइन तक है। उत्तरी हालैंड नामक नहर ४६ मील लम्बी, १३० फुट चौड़ी और २० फुट गहरी है। उत्तरी सागर नामक नहर १५ मील लम्बी ६५ से ११० गज़ चौड़ी और २६ फुट गहरी है। हालैण्ड की नहरों में २००० मील तक छोटे जहाज चल सकते हैं।

नदियों के आर पार भी बांध बनाए गये हैं। इन बांधों पर नगर बस गये हैं। इनके बांधने से बाढ़ के समय समुद्र का पानी देश के अन्दर नहीं आ सकता है। नदियों का पानी नहरों द्वारा समुद्र में फेंक दिया जाता है।

देश दर्शन

आरेञ्ज प्रान्त का विलियम

जब हालैंड स्पेन के साथ युद्ध कर रहा था तो उसका राज्य समुद्र पर फैल रहा था। वह पूर्वी द्वीपसमूहों के साथ संसार के समस्त देशों से अधिक व्यापार कर रहा था। योरुप में वह सबसे अधिक कृषक देश था और उसने योरुप के देशों को बहुत से कृषि के पाठ सिखाये।

विलियम के समय में निदरलैंड हालैंड और बेल्जियम दो भागों में विभाजित हो चुका था। जो प्रान्त स्पेन के शासन में रहना चाहते थे वह निदरलैंड से अलग हो गये और उनका नाम बेल्जियम पड़ा। हालैंड को अब भी निदरलैण्ड कहते हैं।

स्टाडहोल्डर के पुत्र का नाम विलियम था। विलियम का ब्याह इंगलैण्ड के राजा चार्ल्स प्रथम के पुत्री से हुआ। कई बर्षों के बाद विलियम के पुत्र ने जेम्स द्वितीय की पुत्री मैरी से ब्याह किया था और वह दोनों इंगलैंड के विलियम और मैरी के नाम से राजा-रानी हुये थे।

बहुत से जैकोबाइट लोग हालैण्ड भाग गये थे। इस लिये डच तथा इंगलिश जहाजी बेड़े में युद्ध आरम्भ हो गया था। डच जहाजी बेड़े के प्रधान अफसर डे रेटर

तथा वान ट्राम्प और इंगलिश जहाजी बेड़े के प्रधान संचालक मोङ्क और ब्लेक थे। ब्लेक और ट्राम्प में बड़ा झगड़ा हुआ था और दोनों ने एक दूसरे को हराने का बड़ा प्रयत्न किया था।

युद्ध दो साल तक चलता रहा और प्रतीत होता था कि डच लोगों की विजय होगी। आखिरकार डच लोगों की हार हुई। डच लोग अपने पूर्वी द्वीप समूह के व्यापार की रक्षा करने के कारण उस समय संधि करने के इच्छुक थे। उसके बाद ही इंगलैण्ड के क्रम्वेल की मृत्यु हो गई और चार्ल्स द्वितीय हालैण्ड हो कर इंगलैंड आया और डच लोगों के साथ मित्रता की घोषणा किया। परन्तु कुछ समय के पश्चात् इंगलैण्ड और हालैंड में फिर युद्ध छिड़ गया।

इस बार डच लोगों ने विजय के लिये बड़ा भारी प्रयत्न किया परन्तु आखिरकार संधि हो गई। उसके बाद हालैंड में क्रान्ति हुई जिसमें हालैंड के उस समय के शासक डेविट की हत्या कर दी गई। फ्रान्स ने हालैंड पर आक्रमण किया परन्तु हालैंड के लोगों ने एक बार पुनः समुद्र के बांधों को काट पानी भर कर

अपने देश की रक्षा किया। फ्रान्स के युद्ध के बाद विलियम इंगलैंड गया और वहां जाकर उसने चार्ल्स द्वितीय की भतीजी से अपना ब्याह ठीक किया और फ्रान्स तथा इंगलैंड के बीच फूट पैदा करके हालैंड के साथ इंगलैण्ड की मित्रता का बीज बोया।

जब चार्ल्स की मृत्यु हो गई तो उसका भाई जेम्स द्वितीय इंगलैण्ड का राजा हुआ। जेम्स रोमन कैथलिक मत का मानने वाला था। इंगलैण्ड की प्रजा जेम्स के मत से विरोध रखती थी इसलिये उसने आरेञ्ज के विलियम को इंगलैण्ड पर राज्य करने के लिये बुलाया। विलियम प्रोटेस्टेन्ट मत का मानने वाला था। विलियम ने अँग्रेज प्रजा की बात मान ली और इस प्रकार कुछ समय तक इंगलैण्ड और हालैण्ड का शासन एक राजा के अन्तर्गत रहा।

विलियम की मृत्यु के पश्चात् भी हालैण्ड और इंगलैंड एक सूत्र में बंधे रहे और मार्लबोरो की अध्यक्षता में दोनों देशों की सेनाएं फ्रान्स और स्पेन के विरुद्ध युद्ध क्षेत्र में गईं। उस काल में हालैण्ड एक पञ्चायती राज्य बना रहा। १७४८ ई० में विलियम पञ्चम वहां का



राजा हुआ। से आज तक हालैण्ड के शासन की बागडोर राजा या रानी के हाथ में चली आई है।

हालैण्ड की वर्तमान शासक रानी विलहेल्मिना है। विलहेल्मिना के पिता की मृत्यु उसके लड़कपन में ही हो गई थी इस लिये १७ साल तक उसकी माता ने हालैण्ड का शासन किया था। हालैण्ड की वर्तमान रानी का पालन-पोषण बड़ी सादगी के साथ किया गया था। वह बालकाल में हालैण्ड के अफसरों के बच्चों के साथ खेला कूदा करती थी। हालैण्ड के लोग अपनी रानी को उसी प्रकार प्रेम तथा भक्ति की दृष्टि से देखते हैं जिस प्रकार कि इंगलैण्ड की प्रजा महारानी विक्टोरिया को देखती थी। १८ साल की अवस्था में रानी विलहेल्मिना गद्दी पर बैठी और उसने एक जर्मन राजकुमार से अपना ब्याह किया है।

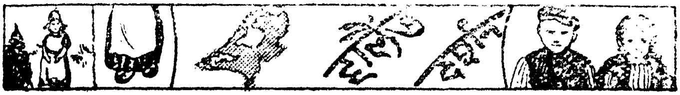
१० मार्च १९४० ई० को जर्मनी ने हालैण्ड पर एकाएक आक्रमण कर दिया और उस पर अधिकार कर लिया है। हालैण्ड की रानी हालैण्ड छोड़ कर इंगलैण्ड चली गई है। इस समय हालैंड पर हिटलर का शासन है।

देश दर्शन

हालैंड तथा समुद्र

हालैंड निवासियों को समुद्र के साथ सदैव एक प्रकार का युद्ध करना पड़ता है। वहाँ के लोग बाँध बना कर अपने देश की रक्षा समुद्र से करते हैं। हालैंड को भूमि समुद्र के धरातल से नीची है। बाँध न बनाये जावें तो समस्त देश में पानी भर जावे। हालैंड के बहादुर निवासियों ने अपने समुद्र तटों पर बड़े बड़े बांध बना रक्खे हैं जिससे समुद्र का पानी उनके देश के भीतर प्रवेश नहीं कर सकता है।

हालैंड देश की भूमि बड़ी नम है। वहाँ पर बहुत बड़ी संख्या में नहरें बनी हुई हैं। यदि हम हालैंड का दृश्य किसी बड़े ऊँचे स्थान से देखें तो वह हमें एक विचित्र भूल भुलइआ की भांति प्रतीत होगा। वहां पर हरे भरे खेतों के टुकड़े तथा लाल छतों वाले गावों का मनोरञ्जक दृश्य दिखाई पड़ेगा। हालैंड की नहरें एक दूसरे से मिली हुई हैं। यह नहरें कहीं कहीं पर बहुत चौड़ी हैं और उनमें बड़ी बड़ी नावें चला करती हैं। हरे भरे मैदानों के बीच मीलों छोटी नहरें फैली हुई हैं



और उनके अन्दर छोटे जहाज़ एक कतार में एक व्यापारिक केन्द्र से दूसरे को चला करते हैं।

हालैण्ड में रेलवे लाइनें भी बहुत हैं वहाँ रेलगाड़ियां बहुत धीरे धीरे चला करती हैं। कहीं कहीं पर तो रेलगाड़ी की धमक से धरती फट जाती है। इसी कारण अधिकांश आने जाने तथा सामान ढोने का काम नहरों द्वारा होता है।

हालैण्ड में सदैव समुद्र का कोई न कोई भाग उथला होकर कीचड़ अथवा नम भूमि का टुकड़ा बनता रहता है। जब इस प्रकार कोई टुकड़ा बनता है तो पहले बांध बना दिया जाता है जिससे समुद्र का पानी उसके अन्दर प्रवेश न कर सके। इस बांध के किनारों पर हवाई चक्कियां लगा दी जाती हैं जिसमें पम्प लगे रहते हैं। इन्हीं पम्पों द्वारा पानी उस स्थान का निकाल कर नहरों द्वारा समुद्र में फेंका जाता है। लगभग ७० साल का समय बीता कि पानी में डूबी भूमि जिसे हारलेम झील कहते थे वहाँ का पानी निकाला गया था और भूमि खेती करने योग्य बनाई गई थी। ज्वेंडेरज़ी समुद्र के पानी को साफ करने का प्रयत्न हालैण्ड के

लोग कर रहे हैं किसी समय यह भी एक सुन्दर भूमि का टुकड़ा बन जावेगा।

हालैण्ड में अच्छे पानी का मिलना कठिन है। चाय और कहवा में जो पानी डाला जाता है उससे उनका स्वाद बिगड़ जाता है। चाय और कहवा इतनी अधिक मात्रा में वहाँ डाली जाती हैं कि यदि हमारे यहां पानी में उतनी मात्रा में मिलाई जावें तो उनका पीना भी कठिन हो जावे। हालैण्ड के घर पानी के ऊपर लकड़ी तख्ते अथवा पत्थर की चट्टियाँ बिछा कर बने मिलते हैं। उन घरों के निवासी उसी के नीचे भरे हुये गंदे मटमैले पानी का प्रयोग पीने, नहाने, धोने और भोजन तयार करने के लिये करते हैं। वह लोग पानी को उबाल कर साफ करने के बाद नहीं प्रयोग करते हैं। वह गंदे पानी को उसी प्रकार प्रयोग करते हैं उनका कहना है कि उबलने से पानी का मज़ा बिगड़ जाता है।

हालैण्ड निवासियों का पहनाव

ओलेन डाम ज्वेडेरज़ी पर हालैंड का एक छोटा सा गाँव है। वहाँ के समस्त निवासी मछुये (मछली मारने वाले) हैं। आज कल यह लोग बड़े गरीब हैं परन्तु किसी समय यह लोग बड़े धनी थे। जब यह लोग धनी थे तो वह अपने कमाई का धन अपने बच्चों और स्त्रियों को आभूषण खरीदने तथा कपड़ा बनवाने में व्यय किया करते थे। वह लोग चांदी के बड़े बड़े बटन बनवाया करते थे।

हालैण्ड के निवासी हालैण्ड के रहने वालों की भांति कपड़े नहीं पहिनते हैं। पुरुष लोग संकरा लाल या नीले रंग का कोट पहिनते हैं। वह लोग लाल या नीला बड़ा झोलेदार पायजामा पहिनते हैं। मछुये लोग मोटे मोजे तथा लकड़ी के जूते पहिनते हैं। लकड़ी के जूतों को सैबोट कहते हैं।

रविवार के दिन यदि मछली के शिकार करने योग्य मौसम नहीं होता है तो वह लोग अपने कोट के बड़े जेबों में हाथ डालकर इधर उधर सड़कों पर टहला

करते हैं। टहलते समय वह सिगार पिया करते हैं या तम्बाकू चूसा करते हैं। उनके बच्चे भी अपने बड़ों की भांति कपड़े पहिनते सिगार पीते या तम्बाकू चूसते हैं।

बटन मनुष्य लोगों का मुख्य आभूषण होता है। उनके पायजामों में कमर के ऊपर दो बड़े बटन होते हैं। यह बटन सामर्थ्य के अनुसार बड़े या छोटे बनाये जाते हैं। कभी कभी तो यह बटन तस्तरी की भांति बड़े होते हैं। छोटे लड़कों के पायजामों के बटन इतने बड़े नहीं होते हैं। वह पैसों या पाइयों के बराबर होते हैं। उनके वेस्ट कोट में गले के समीप दो असली सोने के बटन होते हैं जिनसे गर्दन बन्द की जाती है। हालैण्ड के निवासी कान में छल्ला पहिनते हैं वह बहुधा अँगुलियों में भी छल्ले पहिना करते हैं। इसके सिवा उनके कोटों के बटन चांदी या सोने के बने हुये होते हैं।

हालैण्ड की स्त्रियां अथवा लड़कियां गले के आभूषण अधिक पसंद करती हैं। वह पाँच या छः लर की मोतियों का हार गले में पहिनती हैं। मूँगे का हार भी पहिने जाते हैं। निर्धन स्त्रियाँ नकली मोती वा मूँगे के हारों का प्रयोग करती हैं। परन्तु नकली हार बहुत

कम देखने को मिलते हैं क्योंकि वहां की लड़कियाँ हारों की इतनी शौकीन होती हैं कि भूखों रह रह कर और पेट काट काट कर हार तयार कराती हैं। स्त्रियां अपने कपड़े तथा आभूषण पहिन कर अपने को अधिक से अधिक सुन्दर बनाने का प्रयत्न करती हैं। जब वह अपने ऊनी कपड़े पहिनती हैं तो बड़ी मोटी हो जाती हैं। हालैण्ड की स्त्रियां जितना ही अधिक मोटा पेटी कोट पहिनती हैं उतना ही अधिक उनके पड़ोसी उन्हें अधिक चाव से देखते हैं।

रविवार के दिन जब स्त्रियाँ चर्च को जाती हैं तो वह कई एक पेटीकोट पहिन कर जाती हैं। वह उन्हें काफी ऊँचा पहिनती हैं और प्रत्येक कदम पर उन्हें घुमाने का प्रयत्न करती हैं जिसमें उनके देखने वाले मित्र गिन सकें कि वह कितने पेटीकोट पहिने हुये हैं।

गरीब स्त्रियां रुई और ऊन को मिलाकर बने हुये कपड़ों का प्रयोग करती हैं। वह केवल एक कमीज पहिना करती हैं। सभी स्त्रियां तथा लड़कियां संकरे लेस की टोपियां पहिना करती हैं। यह उसके सिर के ऊपर पर की भाँति प्रतीत होते हैं। छोटे बालक पुरुषों की तरह

और छोटी लड़कियाँ बड़ी स्त्रियों की भाँति ही कपड़े पहिनती हैं। वह छोटी गुड़िया की भाँति प्रतीत होते हैं।

हालैण्ड के प्रत्येक जिले का पहिनाव अलग अलग है। एवसेल गांव के लोग अपने कपड़ों में रूमाल कंधों पर पिनों द्वारा एक ढाँचे में नाथे रहते हैं। यह ढांचे सिर के बराबर ऊँचे होते हैं। छोटी लड़कियाँ जब इन्हें पहिन कर खेतों में दौड़ती हैं तो वह तितलियों की भांति प्रतीत होती हैं।

मार्केन द्वीप की स्त्रियाँ अपने चेहरे के दोनों ओर गालों पर बाल की गोली लटें रखती हैं। वह सामने माथे पर भी सीधी एक बाल की लट रखती हैं। वह सिर पर टोपी पहिने रहती हैं इसलिये उनके बाल की केवल यही तीन लटें दिखाई पड़ती हैं। बूढ़ी स्त्रियाँ जिनके सिर पर बाल नहीं होते हैं वह रुई या बने हुये बालों की लटें लगाया करती हैं। उस द्वीप के लड़के ६ साल की अवस्था तक लड़कियों की भांति ही कपड़े पहिनते हैं। लड़कों की पहिचान लड़कियों से केवल इस कारण होती है कि लड़कों की टोपी में एक



छोटा वटन होता है। ६ साल के बाद लड़के पायजामा पहिनने लगते हैं परन्तु फिर भी उनके ऊपरी भाग का भेष स्त्रियों की भांति ही होता है। वह देखने में बड़े भले प्रतीत होते हैं। यह द्वीप ज़ेडेरज़ी में है।

जाड़े की ऋतु में हालैण्ड में लोग अपनी भरपूर इच्छानुसार बरफ पर फिसल सकते हैं। शीत काल में वहां बरफ पर चलने वाले स्केट जूते का प्रयोग करते है। उस समय वहाँ की सभी नहरें बरफ से जम जाती हैं इसलिये सभी लोग बरफ पर चलने वाले जूतों का प्रयोग करते हैं। जिस प्रकार हमारे देश में छोटे बच्चे चलना सीखते हैं उसी प्रकार हालैण्ड के छोटे बच्चे बरफ पर चलने वाले जूतों का प्रयोग सीखते हैं। वह अपने जूतों को अपने मोज़ों में ढँके हुये पांव के साथ एक डोरी से बांध देते हैं और फिर उसी पर उछलते हैं। जिन जूतों का प्रयोग चलने के लिये किया जाता है उनका संभालना सरल कार्य नहीं है परन्तु फिर भी छोटे डच बच्चे उन्हें भली भांति प्रयोग कर सकते हैं। जब वह घास पर चलते हैं तो उनका पैर नहीं भीगता है। वह लोग आलू और काली रोटी का भोजन करते हैं। कभी कभी उन्हें बछड़े की चर्बी आलू को भिगोने

के लिये मिल जाती है और कभी कभी उन्हें थोड़ा मक्खन तथा मछली भी मिल जाती है। उन्हें मांस बहुत कम खाने को मिलता है।

हालैण्ड के सभी प्रान्तों के घर एक से बनाये जाते हैं। कुछ गाँवों में झोपड़े बने हुये अवश्य मिलेंगे नहीं तो सभी गावों के घर चमकीले रंगों से रंगे रहते हैं और उनकी छतें लाल चमकीले खपड़ों की बनी रहती हैं। दीवार लकड़ी के तख्तों की बनाई जाती हैं। हालैंड के लोग अपने मकानों की सफाई में बहुत समय लगाते हैं। संसार भर में हालैण्ड के गांव सबसे अधिक साफ सुथरे होते हैं। घर का बाहरी भाग प्रत्येक सप्ताह पानी से धोया जाता है। प्रत्येक मनुष्य अपने घर के सामने की सड़क को भी प्रत्येक सप्ताह धोता रहता है। हालैंड के लोगों की खिड़कियां हीरों की भांति चमकती रहती हैं। घर के भीतर के पीतल और ताँबे के जो टुकड़े लगाये जाते हैं उन्हें रगड़ कर इतना साफ कर दिया जाता है कि वह दर्पण का काम देने लगते हैं वह अपने सोने के स्थान दीवार में बनाते हैं। यह स्थान फर्श से तीन चार फुट ऊँचे रहते हैं। जब वह अपने सोने के स्थान में चले

जाते हैं तो सामने पर्दे को खींच लेते हैं और सुख के साथ रात भर सोते हैं। कभी कभी एक सोने के स्थान पर माता-पिता और दो तीन बच्चे एक साथ ही सोते हैं। कुछ घर छोटे खेतों की भाँति होते हैं और वहाँ पर किसानों के बालक घास के ऊपर घोड़सालों में घोड़ों और गायों के साथ सोया करते हैं।



देश दर्शन

सेंट निकोलस

इंगलैंड के बड़े दिन के त्योहार की भांति ही हालैंड में सेंट निकोलस का दिन मनाया जाता है। यह त्योहार ५ दिसम्बर को मनाया जाता है। त्योहार के दिवस के कई दिन पहले से ही शहरों की दूकानें सजाई जाती हैं और त्योहार के दिन बच्चे सुन्दर कपड़े पहिन कर दूकानों की सैर करने के लिये अपने माता-पिता के साथ जाते हैं। दूकानों के द्वारों पर कहीं कहीं सेंट निकोलस की मूर्ति रहती है जो बच्चों को छोटे छोटे पारितोषिक बांटती है।

घर पर बच्चे बड़ी खुशी के साथ आकर अपने घर में फिर सेंट निकोलस का दर्शन करते हैं। बच्चे बाजार से मिठाई फल ले आते हैं और उसे एक स्वच्छ कमरे में बिखेर देते हैं। सेंट निकोलस की संध्या को "स्ट्रूयेराड" कहते हैं जिसके अर्थ बिखेरने वाली संध्या के होते हैं। जब सेंट निकोलस की संध्या को इतनी खुशी मनाई जाती है तो फिर दिन का क्या कहना है। खुश बालक शीघ्र ही उस रात को सो जाते हैं। सोने

के पहले बालक अपने बड़े जूते या पौले को चिमनी के पास रख देते हैं जिससे जब सेंट निकोलस रात को अपने काले गुलाम के साथ आये तो उसे अच्छी वस्तुओं से भर देवे। दूसरे दिन प्रातः काल ही लड़के उठकर अपने जूतों के पास जाते हैं और उसे फलों तथा मिठाइयों से भरा पाते हैं। और अधिक मूल्यवान वस्तुएं घर में छिपी रहती हैं उसे भी बच्चे ढूँढ़ते हैं।

उसके बाद बच्चे अपने तुहफों (इनाम) को एक दूसरे से बदलते हैं।

सेंट निकोलस के त्योहार के दिन निमंत्रण आदि होते हैं और लोग आपस में एक दूसरे को भेंट देते हैं। सेंट के क़ब्र पर एक खास प्रकार की रोटी चढ़ाई जाती है। एक रोटी अदरक की बनाई जाती है इसका रूप अद्भुत होता है और दूसरी एक कचौड़ी बनाई जाती है जिसके बीच में छेद रहता है इस छेद में बादाम भरा जाता है। अदरक की रोटी वाली गुड़िया को अधिक महत्व दिया जाता है और यह प्रत्येक छोटे बड़े को बांटी जाती है। पुरुष के रूप वाली रोटी स्त्री जाति को और स्त्री के रूप वाली रोटी पुरुष जाति को दी जाती है।

त्योहार के दिन किसी होटल या सामाजिक स्थान पर सेंट निकोलस द्वारा भेंट देने का स्वांग भरा जाता है। एक बड़े कमरे में एक बड़ी मेज़ बिछा दी जाती है। उस मेज़ के ऊपर भांति भांति के फल, मिठाई और खिलौने बिखेर दिये जाते हैं। जितने खिलौने होते हैं उतने फल, रोटियां और मिठाइयाँ भी होती हैं। बीच में सेंट के लिये एक स्वेत कुर्सी बैठने के लिये रक्खी जाती है। एक चतुर सुजान मनुष्य सेंट बनाया जाता है वह स्वेत ऊन का लम्बा चौड़ा झोलेदार चोगा पहिनता है। चोगे के नीचे वह रेशमी कपड़ा पहिने रहता है। उसके सिर पर एक सुन्दर टोपी रहती है। उसके बड़े लम्बे स्वेत बाल तथा डाढ़ी होती है। उसका काला गुलाम हरे रंग का कसा हुआ कपड़ा पहिने रहता है। इसके हरे कपड़े के नीचे वह स्वेत वस्त्र पहिनता है। वह नारंगी रंग का रेशमी साफा बांधता है। उसके बड़े काले बाल होते हैं और उसका चेहरा भी काला रहता है।

गांव या नगर के सभी लोग संध्या को अंधेरा हो जाने पर उस स्थान पर सेंट निकोलस द्वारा दिये जाने



वाले भेंट को लेने के लिये आते हैं भेंट बच्चों को बांटे जाते हैं।

जब सब लोग इकट्ठा हो जाते हैं और एक दूसरे को अपने भेंट बदलते हैं। सेंट निकोलस उसी समय तक अपने काले गुलाम को लेकर बड़े कमरे में प्रवेश करता है वह जैसे ही कमरे में घुसता है लड़के बड़े आदर के साथ उसका स्वागत करते हैं और वह अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है उसकी आज्ञा के अनुसार उसका काला गुलाम प्रत्येक लड़के को खिलौना रोटी, फल और मिठाई बांट देता है और उनके खुश रहने का वर्दान सेंट उनको देता है। यद्यपि वहां पर हज़ारों की मात्रा में लड़के एकत्रित होते हैं तो भी प्रसाद पाते समय किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं पड़ती है और सभी अपने स्थानों पर खड़े अपना अपना भाग लेते हैं। इस प्रकार प्रसाद लेने और आशीर्वाद पाने के बाद लड़के अपने अपने घरों को लौट जाते हैं। रात को गाना बजाना भी होता है। इस प्रकार सेंट निकोलस का दिन खुशी के साथ समाप्त किया जाता है।

देश दर्शन

गुललाला (लाला पुष्प)

डच लोग लाला के पुष्प को बहुत प्यार करते हैं। यह उनका राष्ट्रीय पुष्प माना जाता है। यह पुष्प बड़ा सुन्दर, स्वच्छ और भव्य होता है। एम्स्टर्डम के समीप हर्लिम हालैण्ड का एक प्राचीन टाउन है। वहां पर एक व्यक्ति रहता है जो संसार में सबसे बड़ा टलपिर (लाला पुष्प) की खेती करने वाला है। यह फूल एक गांठ या पोती से निकलता है। यह पुष्प कई प्रकार का हाता है। उनमें केवड़ा, नरगिस और कोकाबेल तथा कमल अधिक प्रशंसनीय हैं। यह सभी प्रकार के पुष्प हार्लिम में उगाये जाते हैं। यहां संसार के सभी स्थानों को इन पुष्पों की पोटियाँ भेजी जाती हैं। अप्रैल के मास में यह पुष्प खिलते हैं तो जहाँ तक मनुष्य की दृष्टि जाती है इन भाँति भांति के रंग बिरंगे फूलों की एक बड़ी दरी सी बिछी दृष्टिगोचर होती है और केवड़े की तीव्र सुगंध मीलों तक वायु में गूंजती रहती है। वहाँ पर कोई भी पुरुष मनमानी तोड़ सकता है। किसी को किसी प्रकार का कष्ट उनके प्राप्त करने में नहीं लगता है कष्ट केवल उनके तोड़ने का ही उठाना पड़ता



है। यदि उनके बीच सड़कों पर मोटर द्वारा कोई यात्रा करे तो लड़के उस पर फूलों की टहनियां तोड़ कर फेंकते हैं और वह फूलों से ढंक जाता है। वहां पर उन पुष्पों की कोई कुछ भी परवाह नहीं करता है। इसके गाँठ या पोटी का मूल्य अधिक किया जाता है।

सत्रहवीं सदी में समस्त हालैंड के लोग इस पुष्प के पीछे पागल हो रहे थे। इसके पीछे वह राजनीति, धर्म, युद्ध आदि सभी भूल बैठे। जिन स्थानों पर यह पुष्प नहीं पाये जाते थे वहां पर इनकी गांठे बड़े मूल्य पर बिकती थीं। वह बार बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाभ में ही बार बार बेची जाती थीं। एक प्रकार से इसका बड़ा भारी व्यापार होता था। सौदा केवल कागज़ पर लिख कर किया जाता था और बेचने तथा माल लेने वाला मनुष्य गाँठें को आँख से भी नहीं देखता था। एक गाँठ के लिये हज़ारों रुपये दाम लगाये जाते थे क्योंकि यह समझा जाता था कि अमुक गाँठ केवल संसार में एक ही है। इसका मतलब यह नहीं है कि केवल एक ही है। इसका मतलब यह नहीं है कि केवल एक ही गाँठ थी। बहुत बड़ी संख्या में गाँठों की

उपज की जाती थी और जिस प्रकार की गाँठ जितनी ही कम होती थी इसका उतना ही अधिक मूल्य मिलता था। एक गाँठ का मूल्य गाँठ से अधिक भाव वाले सोने के डली पर बेंचा जाता था। १६३७ ई० में अल्कमार में वाइसराय नामक एक गाँठ ४२,०० फ्लोरेंस (लगभग ६३०० रु०) को बेची गई थी। इस प्रकार और बहुत सी गाँठें इसी प्रकार अधिक मूल्य पर उस भाव में बेंची गई थीं।

इन पुष्पों के सम्बन्ध में एक छोटी कहानी है। मिस्र देश का एक राजा था जिसका नाम पाचा था। वह पुष्पों का बड़ा प्रेमी था। उसने हालैण्ड से सभी प्रकार के लाला पुष्पों की गांठें मंगाया। समस्त गाँठों का मूल्य उसने २०,००० फ्रैंक दिये। जब सभी गांठें एक संदूक में पार्सल करके भेजी गईं तो वह पाचा के एक अफसर के पास पहुँची। उस अफसर ने एक संदूक में गाँठों का समूह देखा। वह पाचा के गांठों के मंगाने के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता था। उसने समझा कि वह प्याज का एक पार्सल था इस लिये उसे बादशाह के रसोइये को दे दिया। रसोइये ने जब उसे देखा तो



ज़ीलैण्ड की ग्वालिन प्रातःकाल अपनी कुत्तेगाड़ी पर दूध बेचने जा रही है।



उत्तरी हालैण्ड के एक द्वीप की दूध मक्खन का रोज़गार करने वाली एक युवा स्त्री



हालैण्ड में पम्प से पानी निकालना



वह प्याज़ से कुछ भिन्न प्रतीत हुये क्योंकि वह सभी एक प्रकार के न थे उसने उन्हें महत्व की वस्तु जानकर ठीक तौर से रसोई के सामान वाले कमरे में रख दिया। कुछ दिनों के पश्चात् पाचा ने एक बड़ा राजनैतिक भोज दिया। रसोइये ने समझा कि अधिक स्वादिष्ट होंगे इस कारण उसने गाँठों को भून कर उनकी तरकारी बना डाली। तश्तरियाँ खाने वालों के सामने तयार कर भोजन करने के लिये रक्खी गई। जब लोगों के दांत उन जड़ों में गड़े तो उनके मुँह बन गये जिसका दृश्य देखने योग्य था और सोचने योग्य है। जब राजा ने उसे खाया तो वह भी उसका अजीब मज़ा देख चकित हो गया। उसे लाला की गाँठों की याद आ गई और मामले को समझ कर वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसे पता था कि उस भोज में उसके २०,०००फ्लोरिन व्यय हो चुके थे। उसी दिन से उसने बगान लगाने के लिये सौगन्ध उठाई और फिर पुष्पों की वाटिका कभी नहीं लगाया। जब यह समाचार हालैण्ड पहुँचा तो उन्होंने क्रोध की याद में अपने यहाँ एक लाला पुष्प का नाम स्टार्मी (तूफ़ानी) लाला पुष्प रक्खा।

देश दर्शन

हालैण्ड के बच्चों का खेल

हालैंड के बच्चे अपने अधिक समय नहर के बजरों पर व्यतीत किया करते हैं। वह बजरों अथवा छोटे जहाजों पर छिपते तथा एक दूसरे को पकड़ते हैं। वह छिपने और ढूँढ़ने का खेल खेलते हैं। यह खेल खतरनाक है। परन्तु हालैंड के लड़के इसे खतरनाक नहीं समझते हैं। वह पानी के आदी हो गये हैं। तैरना भी वह अच्छी तरह जानते हैं। उन्हें डूबने का भी कम भय रहता है। लड़के पानी में बहुधा गिर भी जाते हैं परन्तु दुर्घटना कदाचित् ही कभी होती है।

एक बार एक छोटा बालक नावों के भीतर बाहर खेल कूद रहा था। उसने अपने सामने एक बड़ी नाव आते देखा। इस पर बहुत से आदमी थे। यह नाव उस स्थान पर थी जहां उसने कभी भी नाव रुकते नहीं देखा था। अजीब दृश्य देख कर बालक ने राह चलने वालों को जो कुछ उसने देखा था देखने के लिये बुलाया। देखने पर मालूम हुआ कि उस नाव में बारूद भरी थी। नीचे एक्सचेंज था जिसे कुली लोग जलाने जा रहे थे। लड़के ने बारूद के जलाने के पहले ही लोगों का ध्यान

आकर्षित कर दिया था इस लिये वह बोट जलने से बच गई और उसके आदमियों की जानें बच गईं इसके बदले में उस बालक को पुरस्कार दिया गया। यह कहानी १६२२ ई० की है। उसकी याद में एम्स्टर्डम के बच्चों को वोर्से के मैदान में साल में एक सप्ताह तक खेलने की आज्ञा है।

डच बच्चों के लिये लिनलैक की छुट्टी का दिन भी बड़े महत्व का है। लिनलैक का अर्थ चारपाई में पड़े रहने का होता है। इस दिन के कुछ दिन पहले से डच बच्चे मरे और डूबे हुये बिल्लियों तथा कुत्तों की लाशें एकत्रित करते हैं और उन्हें गाड़ते हैं। लिनलैक दिवस के दिन प्रातः काल वह बच्चे इन लाशों को खोदते हैं। उस दिन सभी लोग बड़े प्रातःकाल उठते हैं और अपने काम करने लगते हैं। जिस घर के लोग सवेरे नहीं उठते यह लड़के उस द्वार पर एक लाश यह दिखाने के लिये छोड़े जाते हैं कि बच्चों का जुलूस उस द्वार से आगे जा चुका है। जब इस जुलूस का अंत हो जाता है तो सभी बच्चे एक स्थान पर बैठकर चाय पानी करते हैं। डच पुलीस इस प्रकार के खेल को रोकने का उपाय करती है परन्तु बच्चों के सामने पुलीस की नहीं

चल पाती है। इसलिये प्रत्येक डच उस दिन बड़े सवेरे प्रातःकाल उठने का प्रयत्न करता है।

एक डच बच्चे की कहानी है कि वह एक बार हालैंएड के एक प्रसिद्ध बाँध की बग़ल वाली सड़क पर घूम रहा था। बाँध के हरेक किनारे पर जंगली फूल लगे हुए थे। उस बच्चे की माँ बीमार थी। लड़के ने अपनी माता के लिये पुष्पों का एक गुच्छा एकत्रित करना चाहा। धीरे धीरे वह बालक एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ पर घास से थोड़ा थोड़ा पानी बांध के नीचे से टपक रहा था। बालक का ध्यान पानी की ओर गया परन्तु वह फूल की धुन में कुछ दूर चला गया। उसके बाद वह कुछ सोच कर लौटा तो देखा कि वह सूराख बढ़ रहा था। बालक समझ गया कि बाँध में छेद हो गया है और समुद्र का पानी उसके देश में प्रवेश कर रहा था। छेद उसके देखते देखते और अधिक बड़ा हो गया। वहां पर कोई सख़्त वस्तु ऐसी न थी जिससे वह बालक उस छिद्र को बन्द कर देता। बालक ने उस छिद्र द्वारा बाढ़ आजाने ओर समस्त गाँव के डूब जाने तथा हज़ारों जानों के डूब मरने के ख़तरे को समझ



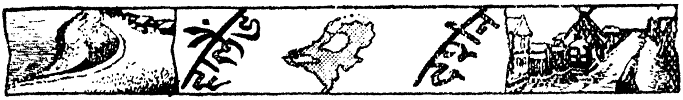
गया। वह चारों ओर सहायता लेने के लिये देखने लगा। वहाँ से गाँव कुछ दूर था। संध्या का समय था। बालक घबड़ा गया परन्तु वह बड़ा देशभक्त, सुजान, चतुर और बहादुर था। उसे बुद्धि देवि ने सहायता दिया। उसने अपना हाथ छिद्र के अन्दर डाल दिया। पानी का आना बन्द हो गया परन्तु रात हो गई और मनुष्यों के आने की आशा जाती रही। लड़के के हाथ में पीड़ा होने लगी। धीरे धीरे उसका सारा शरीर पीड़ा से व्याकुल हो गया परन्तु वह बालक वैसा ही पड़ा रहा। धीरे धीरे वह बालक बेहोश होने लगा। वह तड़प रहा था। उसी समय उसे एक लालटेन दिखाई पड़ी। कुछ लोगों को उसकी माँ ने उसे ढूँढ़ने के लिये भेजा था। जब लोगों ने उस बालक को छिद्र में हाथ डाले और पानी को रोके देखा तो लोग उसके साहस और देश-भक्ति पर मोहित हो गये। शीघ्र बाँध के बनाने वालों को बुलाया गया और उस छेद को बन्द कर दिया गया। उस लड़के ने अपने देश को पानी में डूबने से बचा लिया था। उस बालक की प्रशंसा शब्दों द्वारा करनी कठिन है।

देश दर्शन

डच लोगों के रिवाज

हालैण्ड के लगभग सभी भाग में लोग अब भी सुन्दर मनमोहन वस्त्र पहिनते हैं। स्त्रियाँ जो चञ्चल तथा चपल होती हैं। वह अपने बेल-बूटों वाली टोपी के ऊपर बोनेट (स्त्रियों की टोपी) पहिनती हैं। उसके किनारे फूल अथवा परों के बने रहते हैं। बहुत सी टोपियाँ आगे की ओर परों से भरी रहती हैं इसलिये बोनेट टोपी को पीछे की ओर झुका कर पहिना जाता है। सिर के बाल बिलकुल ढक दिये जाते हैं। वह एक स्वांग बन जाती है। जितनी ही अधिक धनी स्त्री होती है उतना ही अधिक उसके बेलबूटे और बहुमूल्य सिर के आभूषण होते हैं और वह उतना ही अधिक तिरछी टोपी लगती है। वह बड़ा ही उपहास के योग्य होती है।

हालैंड के घरों के बाहर द्वार पर कई जोड़े लकड़ी के जूते (पौले) रक्खे रहते हैं। गिरजा घरों और सामाजिक स्थानों के द्वार पर यह हज़ारों की यात्रा में रक्खे रहते हैं। हालैंड के लोग पैर में सदैव मोजा पहिनते हैं। जब वह द्वार पर जाते हैं तो पौले को उतार देते हैं और भीतर चले जाते हैं। मालूम नहीं वह सभी लोग जब



उन स्थानों के बाहर निकलते हैं तो किस प्रकार अपने जूतों की पहिचान करते हैं।

डच लोग, सारस पक्षी का बड़ा आदर करते हैं वह उसके आगमन को बड़ा शुभ मानते हैं। बागों और खेतों में बड़े बड़े लट्ठे गाड़ दिये जाते हैं और उन पर मचान बना दिया जाता है। यह मचान सारस को घोंसला बनाने के लिये बनाए जाते हैं। सारसों का खेतों में होना बड़े भाग्य की बात मानी जाती है। कोई भी डच सारस को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाता है। यदि लोग सारस से साथ निर्दयता का व्यवहार करते हैं तो उनकी ख़बर पुलिस लेती है। डच लोगों का कहना है कि सारस मनुष्य को बच्चे देते हैं। यदि किसी मकान की छत पर कोई सारस बैठा देखा जाता है तो उस घर में कोई नव-बालक की उत्पत्ति हुई है।

एक बार एक परदेशी एक डच गांव में नाई की दूकान पर बाल बनाने के लिये गया। दूकान का मालिक स्वयम् बाल बनाने के लिये आ निकला। वह परदेशी एक कुर्सी पर बैठ गया। परदेशी ने अपने जेब से एक गल्डेन (लगभग २२ आने का सिक्का)

तथा एक चाकू निकाला और दूकान के मालिक से कहा मेरी खाल बड़ी मुलायम है यदि तुम ठीक से बना लोगे और खून नहीं निकलेगा तो तुम गल्डेन को ले लेने के भागी होगे परन्तु यदि मेरे गाल में किञ्चित् मात्र भी खून निकला तो फिर मैं तुम्हारे शरीर के अन्दर चाकू भोंक दूंगा। मास्टर डर गया और वह बहाना कर के भीतर चला गया उसने अपने दूसरे सहायक आदमी को भेजा। वह जब आया तो परदेशी ने उससे भी वही बातें कहीं। वह नाई भी बहुत डरा उसी बीच दूकानदार का पुत्र स्कूल के पढ़कर लौटा था उसने नौकर का पीला चेहरा देख कर कारण पूछा। नौकर ने सारा हाल कह सुनाया। लड़का शीघ्र ही बाल बनाने के लिये तयार हो गया। उसने परदेशी के बालों को देर तक ठंडे पानी में भिगोता रहा और फिर जब तक वह बाल नहीं बना चुका वह अपने मुँह से सीटी बजाता रहा। बाल बनाने का काम समाप्त होगया और परदेशी को किसी प्रकार की खरोच नहीं आई। उसने लड़के को एक बहादुर लड़का कहते हुये गल्डेन को दे दिया और पूछा कि वह दूसरे नाइयों से अधिक बहादुर क्यों

है। लड़के ने सिक्के को अपने जेब में रख लिया और खाना खाने लगा। उसकी जेब में एक लट्टू, चाकू, सीटी, कुछ मिठाइयाँ, बटन, पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े आदि थे। उस लड़के ने परदेशी को उत्तर दिया कि यदि मैं तुम्हारी खाल काटता तो तुम्हारे चोट करने के पहले ही मैं तुम्हारा जबड़ा भी काटने को तयार था। यह बात सुन कर परदेशी बहुत घबड़ाया और वह दूकान से भाग खड़ा हुआ।

हालैंड के गिरजाघर ठंडे होते हैं। बड़े खेत वाले घरों की छतें भी बड़ी ठंडी होती हैं। हालैंड के निवासी अपने पैरों को गरम रखने के लिये एक प्रकार की गोरसी (आग रखने की वस्तु) रखते हैं। जाड़े के दिनों में हालैंड की स्त्रियां इन गोरसियों को लेकर चर्च जाती हैं और अपने पैर तथा हाथ गरम करती हैं।

हालैंड के अधिकांश गांवों तथा नगरों में केर्मिस का उत्सव मनाया जाता है। यह एक प्रकार का मेला सा होता है। इस अवसर पर गांवों में भीड़ लगी रहती है। नातेदार और रिश्तेदार एक दूसरे से मिलने के लिये आते हैं। भांति भांति की दूकाने गाँवों में लगती

हैं जहां पर प्रत्येक तरह की वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं।

हालैंड के निवासी प्रातः काल रोटी और मक्खन का भोजन करते हैं। हालैंड में चीनी का प्रयोग करना सुख का जीवन व्यतीत करना माना जाता है। वहां गरीब लोगों को चीनी खाने के लिये नहीं मिलती है।

हालैंड की स्त्रियां सफाई का बड़ा ध्यान रखती हैं। सफाई के सम्बन्ध में एक कहानी प्रसिद्ध है। एक बार एक प्रसिद्ध डच व्यक्ति एक डच महिला से भेंट करने के लिये गया। उस महिला के नौकरानी को गर्व था कि वह अपने मालिक के घर को बहुत स्वच्छ रखती है। जब नौकरानी ने द्वार खोला और भद्र पुरुष को खड़े देखा तो वह उन्हें उठाकर एक कुर्सी पर बैठा दिया और उनके जूते उतार कर जूतों के स्थान पर रख दिया। उसके बाद वह महिला से भेंट कर सके थे। नौकरानी नें यह सब कुछ केवल इसलिये किया था जिससे उन महाशय के जूतों से द्वार या बरामदे में किसी प्रकार का धब्बा न बन जावे।



मल्लाह और घोड़े की कथा

हालैण्ड के छोटे से देश में ग्यारह प्रान्त हैं। हालैंड देश की भूमि समतल है। वहां पर ऊँचे, नीचे दृश्य देखने को नहीं हैं। केवल दक्षिण का एक प्रान्त समतल नहीं है। हालैंड की भूमि समतल देश होते हुये भी प्रत्येक प्रान्त से भिन्न है। उत्तर के प्रान्त सुन्दर हरे हैं उनके गावों की छतें लाल हैं। खेतों के घर सुन्दर तथा शानदार और चमकीले हैं। ग्वेल्डरलैण्ड का दक्षिणी प्रान्त नम है और वहां पर घास-फूस के झोंपड़े बनाए जाते हैं।

उत्तर की ओर फ्रीज़लैण्ड का प्रान्त है यह प्रान्त हालैंड का सब से अधिक उपजाऊ तथा धनी माना जाता है। यहाँ पर हालैंड की सबसे अधिक सुन्दर स्त्रियाँ पाई जाती हैं। इस प्रान्त की स्त्रियाँ बड़े बहुमूल्य आभूषण पहिनती हैं। आभूषणों में बहुमूल्य हीरे जड़े रहते हैं और उनकी बेल-बूटों की टोपी में साफ सोने का प्रयोग होता है। वह बड़े मूल्य वाले कपड़े पहिनती है। कहा जाता है कि किसी समय में यह प्रान्त इतना

धनी था कि लोग अपने द्वार पर आने वाले भिखारियों को सोना की भिक्षा दिया करते थे और अपने तम्बाकू के पाइप में आग बैंकों के नोट से सुलगाया करते थे।

फ्रीज़लैण्ड का मुख्य नगर लीवार्डेन है। यह किसी समय में एक तटीय नगर था। परन्तु इन नगर के निवासियों ने अपने परिश्रम से इसे समुद्र से अलग कर लिया है और अब यहां की भूमि उपजाऊ हो गई। यहाँ पर अच्छी खेती होती है। इस नगर के सम्बन्ध में एक सच्ची कहानी नीचे दी जाती है :—

इस नगर के एक बाज़ार वाली गली में एक दिन एक घोड़ा बेंचा जा रहा था। बेंचने वाला ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर दाम लगाने वालों को दाम लगाने के लिये फुसला रहा था। घोड़ा बहुत तगड़ा मज़बूत और सुन्दर न था। कोई भी व्यक्ति घोड़े का मूल्य लगाने को तयार न था सभी उसका उपहास कर रहे थे। धीरे धीरे उसका दाम २२) रुपये लगाये गये। बढ़ते बढ़ते उसका दाम ३७) रुपये लग गया। उसी समय जैक नामक एक नवयुवक मल्लाह वहाँ आया वह जहाज पर काम करने गया था और रुपये कमा कर लौटा था। उसके पास



काफ़ी रुपये थे। वह अपनी मां से भेंट करने आया था वह पैदल था। जोश में आकर उसने घोड़े का दाम ४५) रुपया लगा दिया। घोड़ा उसके हाथ बेंच दिया गया। लोग उसे अचम्भे की निगाह से ताकते रह गये क्योंकि घोड़ा ४५) रुपये का कदापि नहीं था।

वह मल्लाह बिलकुल अजनबी मालूम होता था। घोड़े को लेकर वह अपनी मां की खोज में चला। उसकी माता एक गली में एक बड़े मकान में पाँचवे तल्ले पर एक छोटे कमरे में किराये पर रहती थी वह अपने मां के मकान में पहुँचा और जब उसे मालूम हुआ कि उसकी माँ ऊपर रहती है तो घोड़े को सीढ़ियों द्वारा ऊपर ले जाने लगा। घोड़ा कमज़ोर था। बड़ी कठिनता के साथ ऊपर गया जब वह अपनी मां के सामने छोटे कमरे में घोड़ा सहित पहुँचा तो उसकी माता उसकी अल्प बुद्धि पर अप्रसन्न हुई। परन्तु जब उसने उसके जेब से रुपये निकाले और काफी धन देखा तो अप्रसन्नता खुशी में बदल गई। घोड़े को उस समय वहीं रक्खा गया परन्तु बाद में उसे नीचे लाकर बेंचने का प्रयत्न किया गया। घोड़े का नीचे आना बहुत कठिन था। वह ऊपर ही बड़ी कठिनता से गया था।

वह नीचे उतरने की शक्ति ही नहीं रखता था। उसे जबरदस्ती नीचे उतारने का प्रयत्न किया गया सीढ़ियों द्वारा वह उतारा गया परन्तु जब केवल पाँच सीढ़ियाँ उतरने को शेष रह गईं तो उसने नीचे आने से बिलकुल इंकार कर दिया। इस पर उसे मार डाला गया और तब उसे नीचे लाया गया। यद्यपि यह एक उपहास युक्त तथा मूर्खता की गाथा थी परन्तु फिर भी इसमें लोगों को काफी आनन्द आया था। वहाँ पर एक अंग्रेज साहब थे। वह घूमने गये थे। उन्हें यह तमाशा देख खुशी हुई थी उन्होंने उस मल्लाह को कुछ रुपये इनाम दिये थे।

प्राचीन नगर

डच नगर

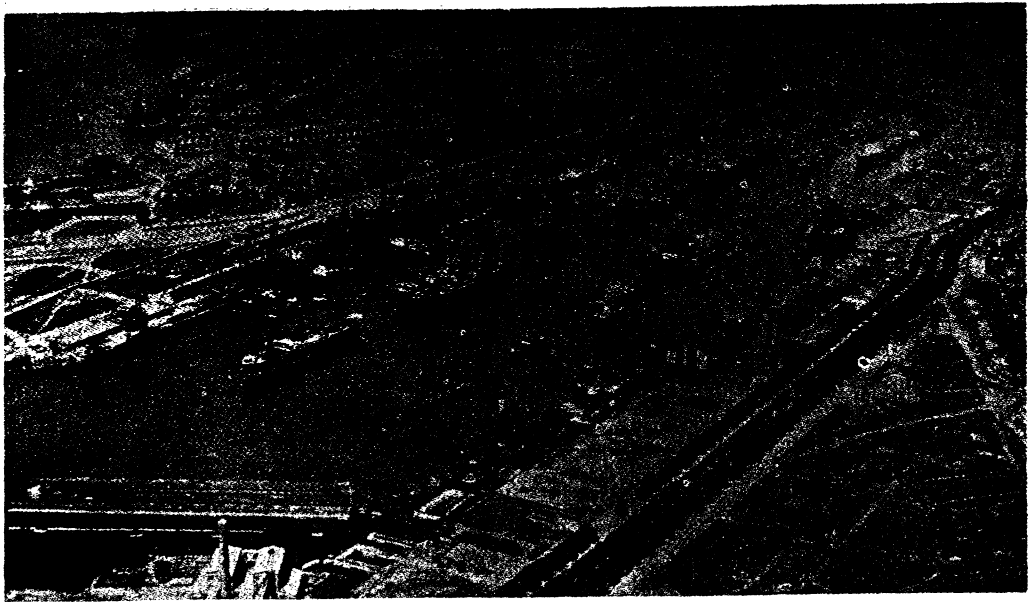
हेग—यह हालैण्ड की राजधानी है। यहां पर हालैंड की सरकार रहती है और हालैण्ड की रानी का यहाँ पर निवास स्थान है।

एम्स्टर्डम—यह नगर हालैण्ड का सबसे अधिक प्रसिद्ध नगर है। यहां पर भी हालैण्ड की रानी के रहने का महल बना हुआ है। इस नगर का भ्रमण रानी साल में कम से कम एक बार करती है। वह इस नगर में नगर से कर लेने के लिये आती है। जब रानी अपनी राजगद्दी होने पर प्रथम बार एम्स्टर्डम गई तो वहाँ के एक विद्वान ने एक भाषण रानी के पढ़ने के लिये लिखा था। उस समय रानी विल्हेल्मिना की अवस्था केवल १८ साल की थी। रानी ने उस भाषण को अपनी प्रजा को पढ़ कर सुनाया परन्तु पढ़ने के बाद उसे फाड़ डाला और फिर अपने सरल शब्दों में एक भाषण लिखा और उसे पढ़ा और कहा कि मैं अपनी प्रजा के साथ प्रजा की भाषा में ही बातचीत करना पसंद करती हूं मैं बड़े आदमियों की भाषा का प्रयोग

आम प्रजा के मध्य नहीं करना चाहती हूँ। रानी के ऊपर उसके बड़े मंत्रियों का प्रभाव अधिक नहीं है। इसी कारण हालैंड की प्रजा उसे बहुत प्यार करती है।

एम्स्टर्डम नगर के समीप एक बड़ी गँदी बस्ती मछुवों तथा मजदूरों की है। यह बस्ती बड़ी गंदी है तो भी हर साल रानी उस बस्ती में जाती है और अपने प्यार भरे शब्द तथा सुरीली मुस्कान उन्हें देती है। वहां के लोग रानी का स्वागत भी बड़े उत्साह के साथ करते हैं। जब रानी वहाँ घूमने जाती है तो वह अपने साथ किसी प्रकार के रक्षक नहीं रखती है और न उसके पास किसी प्रकार का हथियार ही होता है।

एम्स्टर्डम नगर वेनिस की भांति लट्ठों तथा तख्तों पर बना है। वहां पर कीचड़ में बड़े बड़े लट्ठे गाड़ दिये जाते हैं और उन्हीं लट्ठों पर बड़े बड़े मकानात बनाये जाते हैं जो सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित बने रहते वहाँ की खिड़कियों में भांति भाँति के रंगीले शीशे लगाये जाते हैं। बहुत से शीशे उस समय के लगे हुये हैं जब कि शीशों का प्रयोग करना बड़प्पन ख्याल किया जाता था। नहरों की समीप की अधिकांश सड़कें तथा



राटर्डम हालैण्ड का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। इस चित्र में उसके बन्दरगाह का दृश्य दिखाया गया है।



१९ मील लम्बे हालैण्ड के एक बांध की नींव डाली जा रही है।



ऐम्स्टर्डम नगर नहरों का एक जाल है। वहाँ नहरों में ३०० पुल हैं।
नगर के भवन लट्ठों को भूमि पर गाड़ कर बनाए गये हैं।

गलियाँ छोटी छोटी ईंटों की बनी है। उन सड़कों पर रहने वाले लोग सड़कों को धोते हैं और सदैव साफ रखते हैं। वहाँ के लोग सुन्दर कपड़े पहिनते हैं परन्तु कपड़े अच्छे सिले नहीं होते हैं वह पुरुष अथवा स्त्री के शरीर पर स्वांग की भांति प्रतीत होते हैं। वहाँ के लोग देखने में अच्छे नहीं लगते हैं। एम्स्टर्डम यात्रियों के रहने के लिये अच्छा स्थान नहीं है।

हालैंड के कुछ छोटे नगर बड़े सुन्दर हैं परन्तु वहाँ के निवासी वहां रहने योग्य नहीं हैं।

मिडिलबर्ग—यह जीलैंड प्रान्त का एक छोटा नगर है। यह नगर बड़ा सुन्दर तथा साफ है। यहां पर दूध मक्खन के रोज़गार करने वाले अपने सामान लेकर चमकीले, भड़कीले वस्त्र पहिन कर बाजार में अपने सामान बेचने आते हैं, और नगर की सुन्दरता को और अधिक बढ़ा देते हैं।

कैम्पेन—नगर के लोग बड़े डरपोक होते हैं। लोग कहते हैं कि वहां पर न बोलने वाले लोग रहा करते हैं। इस नगर से प्रत्येक भांति बेवकूफी की कहानियां उठा

करती हैं। कहा जाता है कि जब नगर का टाऊन हाल बना था तो एक बड़ा भोज दिया गया था। जब निमंत्रण में सम्मिलित होने वाले लोग वहां गये तो उन्होंने चारों ओर से टाऊन हाल को देखा और प्रशंसा किया परन्तु आखिर में कहा सब कुछ ठीक है परन्तु किसी वस्तु की कमी है। वहां पर रसोइये का कोई सहकारी एम्स्टर्डम नगर से आया था अब वह खीमे के बाहर निकला तो उसने देखा कि टाऊन हाल में एक भी खिड़की न थी। उसने कहा कि इसमें तो एक भी खिड़की नहीं है बात सच थी उसमें एक भी खिड़की न थी और वहां के किसी भी व्यक्ति को खिड़की बनाने की याद न आई थी।

एडाम नगर एम्स्टर्डम के समीप उत्तरी हालैण्ड में है। वहां पर एक बड़ा गिरजाघर है परन्तु गिरजाघर के भीतर प्रवेश करने के लिये केवल एक छोटा सा द्वार है उस गिरजाघर के बनाने वाले ने जब तक सम्पूर्ण गिरजे को तयार नहीं कर लिया था तब तक उसे द्वार बनाने की याद ही नहीं आई थी।



हालैंड के लेखक तथा कलाकार

यद्यपि हालैंड एक छोटा सा देश है और उसे अधिक शक्ति वाली देशों तथा समुद्र से सदैव युद्ध करना पड़ा है तो भी वह संसार के बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों का जन्म दाता है। वहां प्रत्येक भाँति के विद्वानों का जन्म दाता है। वहां पर प्रत्येक भांति के विद्वानों का जन्म हुआ है। वहां के लोग स्थल तथा जल के प्रसिद्ध सैनिक हो चुके हैं।

भाषा में भी डच लोग पीछे नहीं रहे हैं। एरेज्मस हालैंड का निवासी था। वह सोलहवीं सदी में इँगलैण्ड गया था। एरैज्मस सर टामस मारे का बड़ा भारी मित्र था। ग्रोटियस और बोयर हावे दूसरे बड़े लेखक हैं। टामस केम्पिस नामक डच नवयुवक साधु ने इमीटेशन आफ क्राइस्ट नामक पुस्तक लिखी थी। फादर कैटस सोलहवीं तथा सत्रहवीं सदी का एक बड़ा लेखक था। उसकी कहावतें, छोटी छोटी कहानियाँ बड़ी सुन्दर तथा प्रसिद्ध हैं। उसके लेख प्रजा के लिये लिखे गये थे। और सदैव के लिये उपयोगी हैं। उसके लेख शेक्सपियर ईसप, कालीदास आदि से कम मूल्यवान नहीं हैं।

देश दर्शन

मुल्थाटुली एक बड़ा डच लेखक था। वह पूर्वी द्वीप समूह में एक प्रधान पद पर काम करता था। उसने अपने लेख में वहां के निवासियों का जीवन लिखा है। और उसके लेख द्वारा वहां की बहुत सी त्रुटियां ठीक कर दी गई हैं।

फ्रैड्रिक वान ईडेन नामक डच लेखक ने लड़कों के प्रयोग के लिये बड़ी अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखी हैं। उन पुस्तकों के संग्रह को लिटिल जान (छोटा जान) कहते हैं। इस पुस्तक का अनुवाद अँग्रेजी भाषा में हो चुका है। इस पुस्तक की कहानी एक छोटे बालक के सम्बन्ध में है। यह बालक अपने पिता के साथ एक बड़े मकान में रहता था। उसके कोई साथी न था इस लिये उसने जानवरों से मित्रता की थी। एक दिन एक परी उसके पास आई और उसने उसे बहुत छोटा सा जानवर बना दिया और उसे पशुओं पक्षियों और कीड़े मकोड़ों की भाषा समझने की शक्ति प्रदान कर दिया। वह बालक पशुओं, पक्षियों और कीड़े मकोड़ों के मध्य घूमता रहा और नये नये बहादुरी के काम करता रहा।

हालैंएड के प्राचीन चित्रकारों में मेमलिङ्ग और वान



एक का नाम प्रसिद्ध है। यह लोग फ्लेमिश स्कूल के कहे जाते हैं। सोलहवीं सदी में हालैंड में बहुत से कलाकार थे जिनका नाम संसार में प्रसिद्ध है। उनमें से एक का नाम जान वान स्कोरेल था। उसकी मृत्यु १५३८ ई० में हुई थी। उसने बहुत सी चित्र कारियां की जिनमें हालैण्ड से जेरूसिलम के धार्मिक यात्रियों की चित्रकारियाँ अधिक प्रसिद्ध हैं।

फ्रान्स हाल्स नामक चित्रकार हालैंड में अद्वितीय था। वह एक बड़ा प्रसन्न चित्त, मोटा और धनी आदमी था। वह एक धार्मिक व्यक्ति था और ईश्वर से रोज प्रार्थना मांगता था कि वह उसे स्वर्ग पहुँचा देवे। वह संसारिक जीवन को भी बहुत प्यार करता था। उसकी सोने की चारपाई रंगने वाली दूकान के भीतर रहती थी। एक दिन उसके शिष्यों ने उसके साथ मज़ाक किया और उसको चारपाई को रस्सी से खम्भों पर बांध दिया। चित्रकार को इसकी किञ्चित् मात्र भी पता न था। वह भोजन करके अपनी चारपाई पर सोने के लिये गया और सोते समय प्रार्थना किया कि ईश्वर उसे स्वर्ग पहुँचा दे जैसे ही वह प्रार्थना करने लगा उसकी चार-पाई ऊपर की ओर उठने लगी यह देख वह बड़ा चकित

हुआ और उसने कहा ईश्वर मुझे अभी स्वर्ग में न ले जाओ। उसके शिष्यों ने चारपाई नीचे कर दिया। वह कलाकार १५८० ई० में पैदा हुआ था और १६६५ ई० में मरा था।

एक दूसरे चित्रकार का नाम जान स्टीन था। वह अपनी प्रसन्नता के लिये चित्रकारी किया करता था। वह मदिरा बनाने का भी काम करता था। उसके बाद वह एक सराय का मालिक भी बन गया था। जब वह खूब शराब पी लेता था तो चित्रकारी करता था और अपनी मदिरा का मूल्य चित्रकारी द्वारा चुकाया करता था। उसकी चित्रकारियां बड़ी सुन्दर होती थीं।

जेरार्ड डोव एक बड़ा कलाकार था। वह १६१३ ई० में पैदा हुआ था। वह रेम्ब्रैण्ट का शिष्य था। वह चित्र बनाते समय उसके प्रत्येक छोटे छोटे भाग को दिखाने का प्रयत्न करता था। एक हाथ के चित्र को तयार करने में उसने एक सप्ताह लगाये थे। वह १६७६ ई० में मरा था।

उसी काल में पीटर डे हूग भी पैदा हुआ था। अपने सहकारी चित्र कारों की भांति वह भी मनुष्य के दैनिक जीवन की चित्रकारी किया करता था। वह

अपने मामूली दृश्यों को सुन्दर रंगों से रंगा करता था। वानडेर हेल्स्ट नामक चित्रकार फ्रैन्स हाल्स का शिष्य था। वह बड़ी बड़ी तस्वीरों की चित्रकारी किया करता था।

अल्बर्ट क्वेप नामक चित्रकार १६०५ में पैदा हुआ था और १६६५ ई० में मरा था। वह जानवरों तथा प्रकृति के दृश्यों की चित्रकारी किया करता था।

निकोलस मेस का जन्म १६३२ ई० में हुआ था। वह रोज़ाना काम करने वालों की चित्रकारी किया करता था।

डेल्फ्ट का वान मियर १६३२ ई० में उत्पन्न हुआ और १६७५ ई० में मरा। यह भी एक बड़ा डच चित्रकार था।

रेम्ब्रैण्ट वान राज्य लेडेन में १६०६ ई० में पैदा हुआ था। वह हालैंड का सब से बड़ा चित्रकार था। उसका पिता एक मिल का संचालक था। उसने अपने पुत्र को विश्वविद्यालय में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा परन्तु लड़के का ध्यान पढ़ने लिखने में नहीं लगता था। उसके पिता ने उसे वान स्वानेन बर्ग के रंगने की दूकान में उसे भेज दिया। उस समय उसकी अवस्था केवल १६ साल की थी। चतुर तथा सुजान समझ कर उसके पिता ने उसे शीघ्र ही एम्स्टर्डम भेज दिया। परन्तु जब यह नवयुवक वहां पहुँचा तो

उसे मालूम हुआ कि वह वहां के चित्रकारों से अधिक जानता है इसलिये वह अपने घर वापस चला आया और घर पर ही चित्रकारी करने लगा। लेडेन में वह सात साल तक चित्रकारी करता रहा और अपने शीष्यों को शिक्षा देता रहा। सात साल के बाद वह फिर एम्स्टर्डम गया और वहां पर उसने अपनी प्रसिद्ध चित्रकारियों का निर्माण किया। उसके हाथ की चित्रकारियां लन्दन के अजायब घर में रक्खी हुई हैं।

एक बार दो डच चित्रकारों में होड़ (बाजी) ठहरी कि कौन अधिक सुन्दर तथा सच्ची चित्रकारी बना सकता है। उन लोगों ने सजीव चित्र बनाये और निर्णय करने वाले लोग निर्णय करने के लिये बुलाये गये।

पहला चित्र एक फल भरी तश्तरी का था। वह इतना सच्चा चित्र था कि उसे देख कर चिड़ियां फलों पर चोंच मारने के लिये उड़ने लगीं। जितने लोग उसे देखने वाले थे उन्होंने उस चित्र की इतनी प्रशंसा किया कि उसके चित्रकार को विश्वास हो गया कि वही पुरस्कार पावेगा।

उसके पश्चात् देखने वाले दूसरे चित्रकार की ओर

झुके। दर्शक जानते थे कि प्रथम चित्रकार ही विजयी होगा। लोगों ने देखा कि सामने चित्रकारी वाले कपड़े का एक बहूमूल्य पर्दा लटक रहा था। निर्णय कारक लोग प्रतीक्षा कर रहे थे कि दूसरा चित्रकार अपनी चित्रकारी दिखाने के लिये पर्दा उठावेगा परन्तु दूसरा चित्रकार जैसे का तैसा खड़ा रहा। पहले चित्रकार को अपनी विजय का विश्वास हो चुका था वह आगे बढ़ा और पर्दे को उठाने का प्रयत्न किया परन्तु वह पर्दा न था वह तिरपाल पर दूसरे चित्रकार की चित्रकारी ही थी। वह चित्रकारी इतनी सच्ची थी कि सभी को धोका हुआ और सभी उसे पर्दा समझ रहे थे। कहानी का अंत हो गया और निर्णय न हो सका कि कौन सी चित्रकारी अधिक सुन्दर थी।

अब भी डच लोग चित्रकारी करते हैं। जोजेफ रसराईल बर्तमान डच चित्र कार मछुवों के जीवन की चित्रकारी करता है। एराटन मावे, मेस्डाग, ब्रीटनेर, आदि वहाँ के बर्तमान प्रसिद्ध चित्रकार हैं।

डच फार्म (खेत)

डच लोग अपने खेतों के मध्य अपने घर बना कर रखते हैं। वह वहीं पर अपना सारा सामान रखते हैं। गाय घोड़े आदि सब वहीं रहते हैं। घोड़ों से हल जोतने तथा गाड़ी खींचने का काम लिया जाता है। गायों और घोड़ों के रहने के लिये अलग अलग स्थान बने रहते हैं। गायों से दूध मिलता है और उस दूध से मक्खन, पनीर और मलाई तयार की जाती है।

हालैण्ड के खेत बहुधा कीचड़ वाली अथवा नम भूमि में होते हैं। इन स्थानों पर बहुधा पानी भरा रहता वहाँ पर भांति भांति के फूलों की वाटिकाएँ उगाई जाती हैं। पुष्पों का व्यापार किया जाता है। क़हवा भी वहां उगाई जाती है। हालैण्ड के किसान क़हवा पीने के बड़े शौक़ीन होते हैं परन्तु वह क़हवा अधिक डालते हैं और उसमें दूध तथा शक्कर नहीं मिलाते हैं। वह क़हवा पीने में स्वादिष्ट तो नहीं होती है परन्तु शरीर में फुर्ती बहुत पैदा करती है।

कीचड़ समुद्र की बाढ़ में जाने से हो जाता है। बहुधा लोगों को धोका हो जाता है। खेतों के बीच

बीच में नहरें रहती हैं। नहरों को पार करने के लिये पुल बने रहते हैं। यह नहरे खेतों के मध्य डाँड या मेंड का काम देती हैं। खेतों में फूलों की एक सुन्दर कालीन सी बिछी दिखाई पड़ती है। उस दृश्य को देख कर प्रत्येक मनुष्य का ध्यान खेतों और उनके घरों का देखने के लिये लालायित हो उठता है।

एक बार एक अँग्रेज महाशय खेतों के बीच सड़क पर मोटर द्वारा भ्रमण कर रहे थे। वह वहाँ के पुष्पों का दृश्य देखकर मोहित हो गये और मोटर से उतर कर फार्म (खेत) देखने तथा पुष्पों को एकत्रित करने के उत्सुक हो उठे वह सड़क छोड़ कर नहरों को पार करते हुये भीतर की ओर घुसे उन्हें दूर एक झोंपड़ा दिखाई पड़ा। यह किसी किसान का घर था। कुछ गायें झोंपड़े के समीप चर रही थीं। बढ़ियाल आकर हट चुका था। घास तथा पौदों के नीचे कीचड़ जमा थी। धीरे धीरे वह घासों के मध्य एक संकरे पानी की धार के समीप गये। वह धार नहर से पतली थी। उन्होंने उसे नहर ही समझा था। अपना मार्ग छोटा करने के लिये वह उस पानी के सोते के किनारे किनारे नहीं गये। उनके साथ उनका नौकर भी था। धार के दूसरी ओर घास

तथा फूल दिखाई पड़ रहे थे। उन्होंने लांघ कर उस पतली धार को पार करना चाहा परन्तु जैसे ही उन्होंने छलाङ्ग लगाई वह कमर भर पानी और कीचड़ के बीच जा गिरे। वह बड़े चकित हुये और उन्हें उनकी ग़लती मालूम हो गई। वह किसी न किसी तरह वहां से निकल कर फार्म घर में गये। जहां पर उन्हें खाने पीने का सामान तथा पहिनने के लिये कपड़ा मिला।

खेतों के घरों में किसान अपने सपरिवार रहते हैं। उनके सोने का एक कमरा होता है जिसमें दीवारों में सोने के स्थान रहते हैं और दूसरे सामान भी उसी कमरे में रक्खे रहते हैं।

एक रसोई घर होता है। यह एक छोटा नीचा कमरा होता है। रसोई घर में धुवाँ निकलने के लिये चिमनी लगी रहती है। वहां पर खाना बनाने के लिये भट्ठी बनी रहती है और भट्ठी के ऊपर एक बर्तन लोहे की जंजीर में बंधा लटकता रहता है इसी में भोजन पकाया जाता है या क़हवा आदि तयार की जाती है।

दूध का सामान तयार करने के लिये एक अलग स्थान होता है। इस कमरे की छत कपड़ों की होती है



दूध मथने की एक बड़ी नांद रहती है उसी में सारा दूध रख कर मथा जाता है। नांद नीले रंग से रंगी रहती है। मथानी लकड़ी की बनाई जाती है। जब मक्खन तयार हो जाता है तो दूध का मथना बन्द कर दिया जाता है।

गायें बड़ी सुन्दर तथा तगड़ी होती हैं और देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती हैं। उनके बछड़ों को देख कर दया आती है क्योंकि वह चरनी पर एक काठ के पिंजड़े में बांध दिये जाते हैं और सप्ताहों तक एक दशा में बंधे रहते हैं। वह घूम फिर नहीं सकते हैं। जब वह मोटे हो जाते हैं तो बाज़ार में बेंचने के लिये भेजे जाते हैं। बाज़ार में क़साई लोग इन्हें खरीदते हैं और उन्हें मार कर उनका मांस तयार करते हैं। बछड़ों का जीवन बड़ा अल्प होता है। हालैण्ड में बछड़े का मांस बड़ा स्वादिष्ट तथा शक्तिशाली माना जाता है। यह बीमार मनुष्यों को खाने के लिये दिया जाता है और भोजन के समय प्रयोग किया जाता है।

हालैण्ड के लोग रोटी, मक्खन क़हवा का भोजन करते हैं। मछली का प्रयोग भी भोजन में होता है। राई की रोटी बनाई जाती है। मांस का प्रयोग कम होता है।

किसान लोग अपने खज़ाने के कमरों में अपने पूर्वजों के गहने, टोपी, कपड़े और दूसरे सामान सुरक्षित रखते हैं। उनकी धातु की बनी टोपी व्याह के समय प्रयोग की जाती है। वह उसे रगड़ कर इतना साफ करते है कि चमक के कारण उस पर निगाह नहीं रुक सकती है।

वह लोग अपने पास अपना सामान लादने के लिये गाड़ियां भी रखते हैं। गाड़ियां प्राचीन ढंग की होती हैं। इन्हीं गाड़ियों पर वह नगरों को अपना खेती तथा डेरी का सामान बेंचने के लिये ले जाते हैं।

किसानों के घरों में शीशा कंघा आदि का मिलना कठिन हो जाता है डच किसान बड़े प्रेमी होते हैं और यदि वे अधिक गरीब न हुये तो अतिथियों का बड़ा सत्कार करते हैं और अपनी सेवा के बदले में उनसे कुछ नहीं लेते हैं। एक बार आये हुये अतिथि को वह फिर अपने यहाँ बुलाने के बड़े लालायित रहते हैं।



डच लोगों के प्राचीन रीत रिवाज

यह बड़े अचम्भे की बात है कि हालैण्ड एक उन्नतशील देश होते हुये भी प्राचीन रीत रिवाजों को अब भी मानता है। वहां के लोग अब भी प्राचीन ढंग के कपड़े पहिनते हैं। स्त्री तथा मर्द सभी लोग लैस की टोपी लगाते हैं। वह चमकीले भड़कीले क़ीमती झालेदार कपड़े पहिनते हैं। जो लोग रोमन कैथलिक मत के मानने वाले हैं वह रोमन कैथलिक कपड़े पहिनते हैं। प्रोटेस्टेन्ट मत के मानने वाले पश्चिमी भेष धारण करते हैं। अब बच्चों को पश्चिमी भेष में रहना सिखाया जा रहा है परन्तु यह कपड़े इतनी बुरी तरह पहिनाये जाते हैं कि देखने में बड़े खराब मालूम होते हैं। जो लोग पश्चिमी पोशाक का प्रयोग करने लगे हैं उनका कहना है कि उनका प्राचीन भेष बहुत मंहगा और देखने उपहास युक्त है। टोपी द्वारा उनके बाल छिपे रहते हैं और किसी भी अच्छे अथवा खराब चेहरे की पहचान दूर से नहीं की जा सकती है।

डच लड़के बतख़ पालने के बड़े शौक़ीन होते हैं वह प्रत्येक भांति के बतख़ पालते हैं। बतख़ को वह आदर

की दृष्टि से देखते हैं। उनका कहना है कि यह बतख एक प्रकार की बीमारी को अच्छा करते हैं। वह बच्चे इन बतखों को पालने के लिये सुन्दर छोटे छोटे घर बनाते हैं। मुर्गी तथा कुत्तों के लिये भी वह ईंट को छोटे छोटे घर बनाते हैं। द्वार, खिड़कियां और चिमनी आदि सभी उस घर में रहते हैं। वह सुन्दर रंगों से रंग दिये जाते हैं। द्वारों में घंटा तथा खटखटाने के लिये भी सामान लगाये जाते हैं। खिड़कियों और द्वारों में वह पर्दा भी लगाते हैं।

डच बच्चों के खेल अँग्रेज़ बच्चों से मिलते जुलते हैं। वह बरफ पर चलने वाले जूते पहिन कर छोटे पन में ही दौड़ा करते हैं। स्ली (बरफ पर चलने वाली) गाड़ी पर वह लोग लम्बी पाल लगाते हैं और बरफ पर तेज़ी के साथ इधर उधर दौड़ा करते हैं।

ज्वेडेरज़ी समुद्र जाड़े के दिनों में जम जाता है। यहां पर इन गाड़ियों की दौड़ का खेल बहुधा होता है। यद्यपि यह खेल वहां पर बड़ा खतरनाक भी होता है क्योंकि ठीक ठीक पता नहीं रहता है कि समुद्र का कितना भाग बरफ से जमा हुआ है। मछुवे लोग वहाँ पर बरफ में सूराख करके मछलियों का शिकार करते हैं।

बहुधा दुर्घटनाएँ हुआ करती हैं और सैकड़ों मनुष्यों की मृत्यु समुद्र में डूब कर हो जाती है तो भी प्रत्येक शीत काल तथा बसंत काल में लोग अपनी गाड़ियां और नावें लेकर वहां शिकार खेलने के लिये जाते हैं। हर साल उत्तरी सागर में डच मल्लाह मछली के शिकार के लिये जाते हैं। और कितने ही कभी भी वापस नहीं आते हैं परन्तु उनका जाना आना बन्द नहीं होता है।

जाड़े के दिनों में ज्वेडेरज़ी में बहुत तूफान आते हैं और उससे बड़ी हानि होती है।

कुछ साल व्यतीत हुये जब कि बर्लिन नामक स्टीमर के डूबने की दुर्घटना हुई थी और संसार भर में उसके लिये शोक प्रगट किया गया था। उसमें लगभग १०० आदमी डूब मरे थे।

गरमी के दिनों में ज्वेडरज़ी समुद्र शान्त हो जाता है और वहां पर फिर किसी प्रकार के तूफान नहीं आते हैं। उस समय वह शीशे के एक बड़े तख्ते की भांति प्रतीत होता है। उसके किनारे के नगर सुहावने दीखने लगते हैं और फिर किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता है।

देश दर्शन

रोज़गार धंधे

डच लोग जलाने के लिये कोयले का बहुत कम प्रयोग करते हैं। कोयला बाहर से मँगाया जाता है। इस कारण बहुत मँहगा बिकता है। वह जलाने के लिये पीट (एक प्रकार की जलाने की घास) का प्रयोग करते हैं। हालैण्ड में पीट ही जलाने के लिये खास तौर पर प्रयोग की जाती है उसका अधिकांश भाग ग्रेनिङ्गेन प्रान्त से आता है। इस प्रान्त में कीट घास बहुत पाई जाती है और इसी कारण इसको खोदने, सुखाने और इसे जलाने योग्य बनाने का इस प्रान्त में रोज़गार होता है। यह काटने के बाद सुखाई जाती है उसके बाद बोझ बांध कर बिकने वाले स्थानों को छोटे जहाज़ों पर भेज दी जाती है।

यह एक विचित्र घास होती है। जब यह जलती है तो इसके अन्दर से एक प्रकार की गंध निकलती है। यह गंध खराब नहीं होती है। इसके अन्दर से जलते समय नीले रंग का धुँआं निकलता है। यदि इसे जलने के लिये अकेले छोड़ दिया जावे तो यह धीरे जलती है। जलने पर ऊपर भूरे रंग की राख की तरह

जम जाती है जिसे देखने से पता चलता है कि आग बुझ गई है परन्तु यह बात ठीक नहीं होती आग की जलती चिन्गारियां नीचे छिपी रहती हैं यदि उसमें कोई राख जान कर उँगली डालता है तो उसको उँगली जल जाती है।

यह घास तांबे के एक बर्तन में जलाई जाती है। इस तांबे को गोरसी में ढक्कन भी होता है। रात के समय इस बर्तन को ढक्कन से अच्छी तरह ढँक दिया जाता है जिससे हवा अन्दर न जा सके। हवा न जाने से आग बुझ जाती है और वह अध-जली घास आग सुलगाने के काम आती है। इस अधजली घास से आग बड़ी फूर्ती के साथ तयार होती है। पीट घास के एक बोझ का दाम लगभग एक आना होता है।

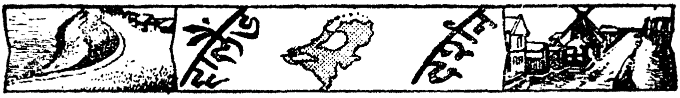
ड्रेन्थे के प्रान्त में भी पीट घास पाई जाती है। वहां पर यह बहुत बड़ी मात्रा में होती है परन्तु वहां इसका कुछ मूल्य नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह प्रान्त दलदली और उजाड़ है। वहां पर एक प्रकार की जंगली जाति रहती है। वह जाति कीचड़ में ही घास के सहारे अपना झोपड़ा बना कर रहती है और आलू

खानी है। यह प्रान्त इतना उजाड़ है कि यहां तक अभी सभ्यता के पैर नहीं पड़े हैं। यहां के लोगों को कपड़ा भी पहिननने के लिये बहुत कम मिलता है।

प्राकृतिक रूप से हालैंड का लिमबर्ग प्रान्त बेल्जियम अथवा जर्मनी का है। यह प्रान्त हालैण्ड की बाटिका के नाम से प्रसिद्ध है। दक्षिण की ओर यह प्रान्त पहाड़ी और बहुत सुन्दर है। इस प्रान्त की राजधानी मास्ट्रिच नगर है। यहां पर मुलायम बलुहा पत्थर पाया जाता है। इस प्रान्त में खुदाई हो रही है और प्राचीन समय के लोगों की हड्डियां निकल रही हैं। यहां पर बहुत प्राचीन कंदराएँ तथा गुफाएँ हैं।

हालैण्ड के फार्म घर बड़े होते हैं। घोड़ों के रहने का स्थान, गायों का मकान और मनुष्य के रहने का मकान सभी एक मकान के अन्दर बने रहते हैं।

मक्खन बनाने का रोजगार हालैंड में बहुत होता है। यह रोज़गार मुख्यतः उत्तरी हालैंड में होता है। मक्खन के व्यापार का मुख्य केन्द्र हालैंड का प्राचीन नगर एड़ाम है।



फार्म घरों के चारों ओर बड़े बड़े घास के मैदान रहते हैं। गायें मैदानों में चरा करती हैं। सभी फार्म घरों में मक्खन बनाने का काम होता है। यह घर चौकोर एक तल्ले वाले होते हैं। मनुष्यों के रहने के कमरे नहर की ओर रहते हैं। शेष तीन ओर डेरी, घोड़ों, गायों और गाड़ियों तथा सामान रखने के कमरे रहते हैं। किसी किसी घर में घोड़ों के रहने के लिये अलग स्तबल बनाया जाता है।

जाड़े के दिनों में गायें भी घर के भीतर बांधी जाती हैं और उन्हें कम्बल उढ़ाया जाता है। वह समस्त शीत काल में भीतर रक्खी जाती है। उसकी पूँछ ऊपर छत पर रस्सी द्वारा बांध दी जाती है जिससे वह गंदी न हो सके। गायों के कमरों का फर्श मोटे लाल खपड़े का बनाया जाता है और सदैव स्वच्छ रक्खा जाता है। दीवार हरे रंग से रंगी जाती है और छत लाल खपड़ों की बनाई जाती है।

जब दही, खोया या मक्खन तयार किया जाता है तो वह सांचों के ढक्कन ठोंस दिये जाते हैं और वह मक्खन दबाने वाले स्थानों पर १५ घंटों तक छोड़ दिये

जाते हैं। डच लोग अब भी प्राचीन ढंग से ही मक्खन तयार करते हैं। वह सारा कार्य हाथ से करते हैं। मक्खन को नमकीन बनाने में १० से १४ दिन तक लगते हैं। नमकीन बनने के बाद पिघले मक्खन को मक्खन के ऊपर लगा दिया जाता है जिससे उसमें दराज़ न हो सकें। उसके बाद मक्खन को सिरके में धोया जाता है और फिर लगभग एक मास तक पकने अथवा तयार करने के लिये छोड़ दिया जाता है। तयार हो जाने पर उनका रंग बदलने के लिये उन पर अल्सी का तेल लगाया जाता है।

मक्खन नावों या कुत्तों की गाड़ियों में भर कर बाज़ार भेजा जाता है। कुत्ते-गाड़ियों को कुत्ते खींचा करते हैं।

अल्कमार नगर वर्तमान समय में सब से बड़ा मक्खन के व्यापार का केन्द्र है।

बाज़ार में सारा मक्खन लाया जाता है और वहां पर बेचने तथा खरीदने वाले बड़े हाव-भाव से मिलते हैं। वह बार बार हाथ मिलाते हैं।



जब व्यापारी लोग मक्खन का अधिकाँश भाग खरीद लेते हैं तो पल्लेदार अथवा बोझिया लोग आते हैं। यह स्वेत वस्त्र पहिने रहते हैं और तिनकों की पीली, नीली अथवा हरी टोप लगाये रहते हैं। बोझिया लोग अपने डोली पर साठ या अस्सी मक्खन की टिकियां लादते हैं। एक टिकिया लगभग २ सेर की होती है। इन बोझियों को ढोने की मज़दूरी बेंचने वाले को ही देनी पड़ती है। बोझिये को प्रत्येक १०० पौंड के लिये दो आने मज़दूरी देनी पड़ती है। दोपहर के समय तक मक्खन का बाज़ार समाप्त हो जाता है।

देश दर्शन

हालैण्ड का विलेम

अगर तुम जहाज़ पर सवार होकर विलेम से मिलने जाओ तो तुमको रास्ते में पन्द्रह बीस दिन लगेंगे। विलेम के देश के पास पहुँचने पर तुम्हें बालू के टीले दिखाई देंगे इनके उस पार दो तीन मील की दूरी पर विलेम का घर है। रेतीले टीले देखने में चाहे अच्छे न लगें लेकिन वे विलेम के हालैण्ड देश को समुद्र में डूबने से बचाते हैं। जहाज़ से ये टीले बहुत ऊँचे नहीं मालूम होते हैं। समुद्र का पानी इनके ऊपरी सिरे से कुछ ही नीचे रहता है। अगर तुम किसी टीले पर चढ़ो तो दूसरी ओर देश इतना नीचा है कि तुम घरों की छतें देख सकते हो। इसी से विलेम के देश को हालैण्ड या नेदरलैण्ड (नीचा देश) कहते हैं। अगर किसी तरह समुद्र का पानी उस पार पहुँच सके तो घरों की छत तक पानी भर जावे और विलेम के देश का बहुत बड़ा भाग उथला समुद्र बन जावे।

इसीलिये विलेम के देश वाले इस बात का बड़ा ध्यान रखते हैं कि समुद्र को रोकने वाला बांध मज़बूत



रहे। जहां बालू कमज़ोर है वहां पत्थर और कांक्रीट की दीवार बना दी गई है। बहुत से स्थानों पर बालू के बाँध को मज़बूत रखने के लिये उसके ऊपर पेड़ लगा दिये गये हैं। यह बांध इतना चौड़ा है कि इसके ऊपर बहुत दूर तक मोटर चलती हैं। कहीं कहीं इस पर से रेल भी चलती हैं। कहीं कहीं इस पर कुछ छोटे घर भी बने हैं। पर यह इतना ऊँचा है कि इस पर चढ़ने के लिये सीढ़ियां बनी हैं।

विलेम के निचले देश में होकर बहने वाली नदियों की तली भी पड़ोस की ज़मीन से बहुत ऊँची है। नदियों के पानी को रोकने के लिये भी ईंटें या चिकनी मिट्टी के लम्बे लम्बे बाँध बनाये गये हैं। यह बांध भी इतने चौड़े हैं कि इन पर सड़कें बनी हैं। विलेम का घर एक बांध से कुछ दूर बहुत नीची ज़मीन पर बना है। यहीं उसका खेत है। अगर यह बांध टूट जावे तो भी बहुत से घर और खेत डूब जावें।

यह बांध बहुत कम टूटते हैं। इनकी देख भाल के लिये विलेम के देश वाले बहुत से आदमी नौकर रखते हैं। यह रोज़ ज़रा से सूराख़ को भी भर देते हैं।

देश दर्शन

विलेम के देश में पानी बहुत बरसता है। यह सब पानी भरा रहे तो भी बहुत सी ज़मीन पानी में डूबी रहे। इस पानी और नदियों के पानी को ठीक ठीक बहाने के लिये विलेम के देश में बहुत सी नहरें बनाई गई हैं। बहुत सी नहरें इतनी बड़ी हैं कि उनमें छोटे छोटे जहाज़ चल सकते हैं। किसी किसी शहर में नहरें इतनी अधिक हैं कि बहुत से लोग नावों से ही सफर करते हैं और नहर के किनारे पर बने हुये घरों में अपना सामान बेचने जाते हैं। विलेम के स्कूल के रास्ते में कई नहरें पड़ती हैं। दो नहरों के ऊपर इतने ऊँचे पुल बने हैं कि उनके नीचे से बड़ी बड़ी नावें निकल जाती हैं। एक नहर के ऊपर पुल नीचा है। जब बड़ी नाव आती है तब पुल की देख भाल करने वाला पुल के एक भाग को मशीन से ऊपर उठा लेता है। इससे बड़ी नाव आसानी से निकल जाती है। पर नाव वाले को कुछ फीस देनी पड़ती है।

पुल के अलग हो जाने से विलेम को स्कूल जाने में कभी कभी देर हो जाती है। पर वह उस समय को पड़ोस के पार्क (बग़ीचे में) बिताता है। इस बग़ीचे में

छोटे छोटे पौधों को इस तरह छांटा जाता है कि पौधों की सूरत भेड़, घोड़े और दूसरे जानवरों की तरह हो जाती है।

गरमी की ऋतु में विलेम नहर में तैरता है और



लकड़ी के जूते (खड़ाऊँ) पहने हुये हालैंड के बालक।

अपने बाप के साथ नाव चलाता है। पर सरदी की ऋतु में उसे ये नहरें बड़ी अच्छी लगती हैं। उन दिनों नदी और नहरें सब बरफ से जम जाती हैं। वह इन पर बरफ के तरह तरह के खेल खेलता है। विलेम का बाप

भी कभी कभी बरफ के खेल खेलने जाता है। अपने घोड़े की नालों के नीचे वह नुकीली कीलें लगवा लेता है। इससे बिना पहिये की लदी हुई स्लेज गाड़ी को खींचते समय उसके पैर बरफ पर नहीं फिसलते। विलेम और उसके साथियों के बीच में कभी कभी बरफ पर फिसलने की दौड़ होती है। सब लड़के लकड़ी के लम्बे लम्बे फिसलने वाले स्केट (तख़्ते) पैर में अटकाते हैं। विलेम अपनी पीठ पर बादबान भी बांध लेता है। इससे उसे हवा का भी ज़ोर मिल जाता है। और वह सब से आगे रहता है।

विलेम के देश के नीचे होने से एक लाभ यह है कि यहाँ समुद्र की हवा का पूरा ज़ोर रहता है। इस हवा से काम लेने के लिये विलेम के बाप ने एक बड़ी हवाई चक्की लगाई है। इसमें दस बारह गज़ लम्बे हत्थे लगे हैं। हवा के चलने से हत्थे भी चलने लगते हैं। विलेम के बाप ने इनमें एक पम्प लगा दिया है। इससे हवा के ज़ोर से पम्प उथले पानी को समुद्र में उलीचता रहता है और विलेम का बाप उथले समुद्र के नीचे से नई ज़मीन निकाल लेता है।



यह ज़मीन बड़ी तर होती है। इसमें फसलें अच्छी नहीं होती हैं। पर इसमें घास बहुत बढ़िया उगती है। विलेम की चितकबरी गाय इसी घास को चरा करती है। कुछ घास सुखाकर सरदी के दिनों के लिये इकट्ठी कर ली जाती है। भीगने से बचाने के लिये घास के टीले के ऊपर छप्पर छाया रहता है।

इसके पास ही विलेम का पक्का घर है। घर ईंटों का बना है। घर की दीवारें हरी हैं लेकिन छत लाल है। विलेम की माँ इसे बहुत साफ रखती है। वह फर्श को रोज़ रगड़ रगड़ कर धोती है। जब विलेम ढीला ढाला थैलेनुमा पाजामा और ऊँची नीली टोपी पहने अपने लकड़ी के जूतों से खटखट करता घर आता है, तब उसे लकड़ी के जूते घर के बाहर ही उतारने पड़ते हैं। इसी तरह स्कूल में विलेम और उसके साथियों को लकड़ी के जूते (पौले) क्लास के बाहर क़ायदे से एक क़तार में रखने पड़ते हैं। विलेम के पड़ोस में ज़मीन इतनी गीली रहती है कि चमड़े के जूते को ठंडे रहने का डर रहता है। उसे लकड़ी के जूते (पौले) पहनने का ऐसा अभ्यास हो गया है कि वह उन्हें पहन कर बड़ी आसानी से दौड़ सकता है। विलेम के घर के पास ही

गायों के रहने का बाड़ा (घर) है। सरदी में वे इसी घर में रहती हैं। उनको सूखी हुई घास खिलाई जाती है



हालैण्ड देश वाले सारस के घोंसले को बहुत शुभ मानते हैं। जिस घर में सारस घोंसला बनाता है वह बड़ा भाग्यवान समझा जाता है। उनके घोंसलों को कोई नहीं छेड़ता है। सरदी की ऋतु में जब सारस कड़ी ठंड से बचने के लिये अफ्रीका चले जाते हैं तब अवश्य घोंसले साफ कर दिये जाते हैं।

और आराम से बैठने के लिये फर्श पर मुलायम बालू बिछा दी जाती है। ये गायें बहुत दूध देती हैं। विलेम का बाप कुछ दूध बड़े पीतल के साफ और चमकीले कनस्तरों में भर कर नाव पर पहुँचाता है। नावों पर दूसरे लोग भी अपना दूध रख कर बड़े शहर में पहुँचाते हैं। कुछ लोग लारी पर अपना दूध भेजते हैं। विलेम का बड़ा भाई एक छोटी गाड़ी पर दूध के कनस्तर रख कर बेचने जाता है। इस गाड़ी को उसके दो कुत्ते खींचते हैं इन्हें वह बहुत प्यार करता है।

बहुत सा दूध फिर भी घर आता है। इससे विलेम की माँ मक्खन और पनीर बनाती है। मक्खन तुरन्त ताज़ा बिकता है। लेकिन पनीर के गोल रंगीन डले कुछ दिन रखने के बाद बिकते हैं। अक्सर मुर्गियों के अँडे भी इतने अधिक हो जाते हैं कि विलेम की माँ उन्हें बाज़ार भेज देती है। विलेम के देश वाले वसन्त और गरमी की ऋतु में अपने खेतों में तरह तरह के फूल वाले पौधे बोते हैं। फूलों के फूलने से मीलों तक रंग बिरंगे खेत बड़े सुहावने लगते हैं। इसी समय विलेम फूलों की लड़ाई का त्योहार मनाता है। फूलों को तोड़ कर लड़के एक दूसरे को मारते है। फूलों की मार से उनके

चोट बिल्कुल नहीं लगती है। पर फूलों की गंध से हवा बड़ी सुगन्धित हो जाती है। लेकिन विलेम के देश वाले फूलों को खराब नहीं करते हैं। वे इन फूलों को इंगलैंड और अमरीका में बेचते हैं। इन से उन्हें अच्छे दाम मिलते हैं।

विलेम की माँ घर वालों के लिये ऊनी, सूती और मलमल के कई कपड़े रखती है। पर वह किसी कपड़े को खराब नहीं होने देती है। जहाँ कपड़ा ज़रा फटा वह उसे तुरन्त सी देती है। एक बार विलेम का कुरता दो तीन जगह बुरी तरह फट गया। विलेम की मां ने वहां पर सुन्दर मज़बूत प्योंदे लगा दिये। विलेम में एक बुरी आदत है। वह छोटा होने पर भी सिगार पीता है।